गायत्री के प्रत्यक्ष चमत्कार
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्
श्रीराम शर्मा आचार्य

गायत्री द्वारा सम्पूर्ण दुःखों का निवारण

मनुष्य ईश्वर का उत्तराधिकारी एवं राजकुमार है । आत्मा परमात्मा का ही अंश है । अपने पिता के सम्पूर्ण गुण एवं वैभव बीज रूप से उसमें मौजूद हैं । जलते हुए अंगार में जो शक्ति है वही छोटी चिनगारी में भी मौजूद है । इतना होते हुए भी हम देखते हैं कि मनुष्य बड़ी निम्न कोटि का जीवन बिता रहा है, दिव्य होते हुए भी दैवी सम्पदाओं से वंचित हो रहा है ।

परमात्मा सत् है, परन्तु उसके पुत्र हम असत् में निमग्न हो रहे हैं । परमात्मा चित् है, हम अन्धकार में डूबे हुए हैं । परमात्मा आनन्द स्वरूप है, हम दुःखों से संत्रस्त हो रहे हैं । ऐसी उल्टी परिस्थिति उत्पन्न हो जाने का कारण क्या है ? यह विचारणीय प्रश्न है ।

जब कि ईश्वर का अविनाशी राजकुमार अपने पिता के इस सुरम्य उपवन संसार में विनोद क्रीड़ा करने के लिये आया हुआ है तो उसकी जीवनयात्रा आनन्दमय न रहकर दुःख-दारिद्र से भरी हुई क्यों बन गई है ? यह एक विचारणीय पहेली है ।

अग्नि स्वभावतः उष्ण और प्रकाशवान् होती है, परन्तु जब जलता हुआ अंगार बुझने लगे तो उसका ऊपरी भाग राख से ढक जाता है तब उस राख से ढके हुए अंगार में वे दोनों ही गुण दृष्टिगोचर नहीं होते जो अग्नि में स्वभावतः होते हैं । बुझा हुआ, राख से ढका हुआ अंगार न तो गर्म होता है और न प्रकाशवान्, वह काली कलूटी, कुरूप भस्म का ढेर मात्र बना हुआ पड़ा रहता है । जलते हुए अंगार को इस दुर्दशा में ले पहुँचाने का कारण वह भस्म है जिसने उसे चारों ओर से घेर लिया है । यदि यह राख की परत ऊपर से हटा दी जाय तो भीतरी भाग में फिर वैसी ही अग्नि मिल सकती है जो अपनी उष्णता और प्रकाश के गुण से सुसम्पन्न हो ।

परमात्मा सच्चिदानन्द है, वह आनन्द से ओतप्रोत है । उसका पुत्र आत्मा भी आनन्दमय ही होना चाहिए । जीवन की विनोद क्रीड़ा करते हुए इस नन्दनवन में उसे आनन्द ही अनुभव होना चाहिए । इस वास्तविकता को छिपाकर जो उसके बिलकुल उलटी दुःख-दारिद्र और क्लेश-कलह की स्थिति उत्पन्न कर देती है वह कुबुद्धि रूपी राख है । जैसे अंगारे को राख ढककर उसको अपनी स्वाभाविक स्थिति से वंचित कर देती है वैसे ही आत्मा की परम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सात्विक, परम आनन्दमयी स्थिति को यह कुबुद्धि ढक लेती है और मनुष्य निकृष्ट कोटि का दीन–हीन जीवन व्यतीत करने लगता है ।

'कुबुद्धि' को ही माया, असुरता, अन्धतमिस्रा, अविद्या आदि नामों से पुकारते हैं । यह आवरण मनुष्य की मनोभूमि पर जितना मोटा चढ़ा होता है वह उतना ही दुःखी पाया जाता है । शरीर पर मैल की जितनी मोटी तह जम रही होगी उतनी ही खुजली मचेगी और दुर्गन्ध उड़ेगी । यह तह जितनी ही कम होगी उतनी ही खुजली और दुर्गन्ध कम होगी । शरीर में दूषित, विजातीय विष एकत्रित न हो तो किसी प्रकार का कोई रोग न होगा, पर यह विकृतियाँ जितनी अधिक जमा होती जायेंगी शरीर उतना ही रोगग्रस्त होता जायेगा । 'कुबुद्धि' एक प्रकार से शरीर पर जमी हुई मैल की तह या रक्त से भरी हुई विषैली विकृति है जिसके कारण खुजली, दुर्गन्ध, बीमारी तथा अनेक प्रकार की अन्य असुविधाओं के समान जीवन में नाना प्रकार की पीड़ा, चिंता, बैचेनी और परेशानी उत्पन्न होती रहती है ।

लोग नाना प्रकार के कष्टों से दुःखी हैं । कोई बीमारी में कराह रहा है, कोई गरीबी से दुःखी है, किसी का दाम्पत्य जीवन कष्टमय है, किसी को सन्तान की चिन्ता है, व्यापार में घाटा, उन्नति में अड़चन, असफलता की आशंका, मुकदमा, शत्रु के आक्रमण का भय, अन्याय से उत्पीड़न, मित्रों का विश्वासघात, दहेज की चिन्ता, प्रियजनों का विछोह आदि का दुःख आये दिन दुःखी बनाये रहता है । व्यक्तिगत जीवन की भाँति धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में भी अशांति कम नहीं है । यदि कोई व्यक्ति अपने आपको बहुत संभाल कर रखे तो भी व्यापक बुराईयों एवं कुव्यवस्थाओं के कारण उसकी शांति नष्ट हो जाती है और जीवन का आनन्दमय उद्देश्य प्राप्त करने में बाधा पड़ती है ।

दुःख चाहे व्यक्तिगत हो या सामूहिक, उसका कारण एक ही है और वह है–कुबुद्धि । संसार में इतने प्रचुर परिमाण में सुख–साधन भरे पड़े हैं कि इन खिलौनों से खेलते सारा जीवन हँसी–खुशी में बीत सकता है । मनुष्य को ऐसा अमूल्य शरीर, मस्तिष्क एवं इन्द्रिय समूह मिला हुआ है कि इनके द्वारा साधारण वस्तुओं एवं परिस्थितियों में भी इतना आनन्द लिया जा सकता है कि स्वर्ग भी उसकी तुलना में तुच्छ सिद्ध होगा । इतना सब होते हुए भी लोग बेतरह दुःखी हैं, जिन्दगी में कोई रस नहीं, मौत के दिन पूरे करने के लिए जीवन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बोझ की तरह काटा जा रहा है । मन में चिन्ता, बेबसी, भय, दीनता और बेचैनी की अग्नि दिन भर जलती रहती है, जिसके कारण पुराणों में वर्णित नारकीय यातनाओं जैसी व्यथायें सहनी पड़ती हैं ।

इस संसार का चित्र सुन्दर है, इसमें कुरूपता का एक कण भी नहीं । यह विश्व विनोदमयी क्रीड़ा का प्रांगण है, इसमें चिन्ता और भय के लिए कोई स्थान नहीं । यह जीवन आनन्द का निर्बाध निर्झर है, इसमें दुःखी रहने का कोई कारण नहीं । स्वर्गादपि गरीयसी–इस जननी जन्मभूमि में वे सभी तत्व मौजूद हैं जो मानस की कली को खिलाते हैं । इस सुर दुर्लभ नर तन की रचना ऐसे सुन्दर ढंग से हुई है कि साधारण वस्तुओं को वह अपने स्पर्श मात्र से ही सरस बना लेता है । परमात्मा का राजकुमार आत्मा इस संसार में क्रीड़ा कल्लोल करने आता है, उसे शरीर रूपी रथ, इन्द्रियों रूपी सेवक, मस्तिष्क रूपी मन्त्री देकर परमात्मा ने यहाँ इसलिये भेजा है कि इस नन्दन वन जैसे संसार की शोभा को देखे, उसमें सर्वत्र बिखरी हुई सरलता का स्पर्श और आस्वादन करे । यदि इस महान् उद्देश्य में बाधा उपस्थित करने वाली, स्वर्ग को नरक बना देने वाली कोई वस्तु है तो वह केवल कुबुद्धि ही है ।

स्वस्थता हमारी स्वाभाविक स्थिति है, बीमारी अस्वाभाविक एवं अपनी भूल से पैदा हुई है । पशु–पक्षी जो प्रकृति का स्वाभाविक अनुसरण करते हैं, बीमार नहीं पड़ते, वे सदा स्वास्थ्य का सुख भोगते हैं, पर मनुष्य नाना प्रकार के मिथ्या आहार–विहार के द्वारा बीमारी को न्योंत बुलाता है । यदि वह अपना आहार–विहार प्रकृति के अनुकूल रखे तो कभी बीमार न पड़े । इसी प्रकार सद्बुद्धि स्वाभाविक है । यह ईश्वर प्रदत्त है, दैवी है, जन्मजात है, जीवन संगिनी है । संसार में भेजते समय प्रभु हमें सद्बुद्धि रूपी कामधेनु भी देते हैं ताकि हमारे सम्पूर्ण सुख–साधन जुटाती रहे, परन्तु हम भूलवश, भ्रमवश, अज्ञानवश, मायाग्रस्त होकर सद्बुद्धि को त्यागकर कुबुद्धि को अपना लेते हैं और जैसे मिथ्याचरण से बीमारी न्योंत बुलाई जाती है, वैसे ही मानसिक अव्यवस्था के कारण कुबुद्धि को आमन्त्रित किया जाता है । यह पिशाचिनी जहाँ आई नहीं कि जीवन का सारा क्रम उलटा नहीं, दोनों एक साथ रह नहीं सकतीं । जहाँ कुबुद्धि होगी वहाँ तो अशांति, चिंता, तृष्णा, नीचता, कायरता आदि की कष्टकारक स्थितियों का ही निवास होगा ।

गायत्री सद्बुद्धि ही है । इस महामन्त्र में सद्बुद्धि के लिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वर से प्रार्थना की गई है । इसके २४ अक्षरो में २४ अमूल्य शिक्षा सन्देश भरे हुए हैं, वे सद्बुद्धि के मूर्तिमान प्रतीक हैं । उन शिक्षाओं में वे सभी आधार मौजूद हैं, जिन्हें हृदयंगम करने वाले का सम्पूर्ण दृष्टिकोण शुद्ध हो जाता है और उस भ्रमजन्य अविद्या का नाश हो जाता है जो आये दिन कोई न कोई कष्ट उत्पन्न करती है । गायत्री महामन्त्र की रचना ऐसे वैज्ञानिक आधार पर हुई है कि उसकी साधना से अपने भीतर छिपे हुए अनेकों गुप्त शक्ति–केन्द्र खुल जाते हैं और अन्तःस्थल में सात्विकता की निर्झरिणी बहने लगती है । विश्वव्यापी अपनी प्रबल चुम्बक शक्ति को खींचकर अन्तःप्रदेश में जमा करने की अद्भुत शक्ति गायत्री में मौजूद है । इन सब कारणों से कुबुद्धि का शमन करने में गायत्री अचूक रामबाण मंत्र की तरह प्रभावशाली सिद्ध होती है । इस शमन के साथ–साथ अनेकों दुःखों का समाप्त हो जाना भी पूर्णतया निश्चित है । गायत्री दैवी प्रकाश की वह अखण्ड ज्योति है जिसके कारण कुबुद्धि का अज्ञानान्धकार दूर होता है और अपनी स्वाभाविक स्थिति प्राप्त हो जाती है जिसको लेकर आत्मा इस पुण्यमयी धरती माता की परम शक्तिदायक गोदी में किलोल करने आया है ।

रंगीन काँच का चश्मा पहन लेने पर आंखों से सब चीजें उसी रंग की दिखती है जिस रंग का वह काँच होता है । कुबुद्धि का चश्मा लगा लेने से सीधी साधारण सी परिस्थितियाँ और घटनायें भी दुःखदायी दिखाई देने लगती हैं । जिस मनुष्य को भौंरा रोग हो जाता है, सिर घूमता है मस्तिष्क में चक्कर आते हैं, उसे दिखाई देता है कि सारी पृथ्वी, मकान, वृक्ष आदि घूम रहे हैं । डरपोक आदमी को झाड़ी में भूत दिखाई देता है । जिसके भीतर दोष है उसे बाहर के सुधार से कुछ लाभ नहीं हो सकता, उसका रोग मिटेगा तभी जब बाहरी अनुभूतियों का निवारण होगा । पीला चश्मा पहनने वाले के सामने चाहे कितनी ही चीजें बदल कर रखी जायें, पर पीलेपन के अतिरिक्त और कुछ दिखाई न देगा । बुखार से मुहँ कडुआ हो रहा है तो उसे स्वादिष्ट पदार्थ भी कडुए लगेंगे । कुबुद्धि ने जिसके दृष्टिकोण को, विचार प्रवाह को दूषित बना दिया है वह चाहे स्वर्ग में रखा जाये, चाहे कुबेर सा धनपति या इन्द्र सा सत्ता सम्पन्न बना दिया जाये, तो भी दुःखों से छूट न सकेगा ।

गायत्री महामन्त्र का प्रधान कार्य कुबुद्धि का निवारण है । जो व्यक्ति कुबुद्धि से बचने और सद्मार्ग की ओर अग्रसर होने का व्रत लेता है, वही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री का उपासक है । इस उपासना का फल तत्काल मिलता है । जो अपने अन्तःकरण में सद्बुद्धि को जितना स्थान देता है, उसे उतनी ही मात्रा में तत्काल आनन्दमयी स्थिति का लाभ प्राप्त होता है ।

इसे यह नहीं मान लेना चाहिए कि गायत्री उपासना जीवन सुधार का एक मनोवैज्ञानिक प्रयोग मात्र है । वस्तुतः उसका दर्शन और भाव पक्ष इतना समर्थ है कि सांसारिक कठिनाइयों के निवारण के साथ ही साधक के शरीरस्थ शक्ति केन्द्रों का तेजी से विकास होता है । इन चक्रों, उपत्यिकाओं आदि में ऐसी विलक्षण क्षमतायें भरी पड़ी हैं जो साधक को अणिमा, गरिमा, लघिमा, महिमा, ऋद्धि-सिद्धियों से विभूषित कर देती है । इस जागृति का प्रभाव मनुष्य के व्यक्तित्व को समान रूप से विकसित करने में सहायक सिद्ध होता है ।

व्यायाम से शरीर पुष्ट होता है, अध्ययन से विद्या आती है, श्रम करने से धन कमाया जाता है, सत्कर्मों से यश मिलता है, सद्गुणों से मित्र बढ़ते हैं । इसी प्रकार उपासना द्वारा अन्तरंग जीवन में प्रसुप्त पड़ी हुई अत्यन्त ही महत्वपूर्ण शक्तियाँ सजग हो उठती हैं और उस जागृति का प्रकाश मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में एक विशिष्टता का रूप धारण करके प्रकट हुआ प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है । गायत्री उपासक में तेजस्विता की अभिवृद्धि स्वाभाविक है । तेजस्वी एवं मनस्वी व्यक्ति स्वभावतः हर दिशा में सहज सफलता प्राप्त करता चलता है ।

मानवीय मस्तिष्क में जो शक्ति केन्द्र भरे पड़े हैं, उनका पूरी तरह से उपयोग कर सकना तो दूर, अभी मनुष्य को उनका परिचय भी पूरी तरह नहीं मिलता है । मनोवैज्ञानिकों को अन्तर्मन की जितनी जानकारी अभी तक विशाल अनुसंधानों के बाद मिल सकी है उसे वे दो प्रतिशत के लगभग ही मानते हैं । प्रस्तुत मन की ९८ प्रतिशत जानकारी प्राप्त करना अभी शेष है । इसी प्रकार शरीर-शास्त्री डाक्टरों ने बाहरी मस्तिष्क का केवल ८ प्रतिशत ज्ञान प्राप्त किया है, शेष के बारे में वे अभी अनजान हैं । मस्तिष्क सचमुच एक जादू का पिटारा है, इसमें सोचने-समझने की क्षमता तो है ही, साथ ही उसमें ऐसे चुम्बक तत्व भी हैं जो अनन्त आकाश में भ्रमण करनेवाली अद्भुत सिद्धियों, विभूतियों एवं सफलताओं को अपनी ओर खींचकर आकर्षित कर सकते हैं, सूक्ष्म जगत में अपने अनुकूल वातावरण बना सकते हैं । जिन व्यक्तियों के साथ अपनी कामना-आकांक्षा का सम्बन्ध है, उन पर ऐसा प्रभाव डाला जा सकता है कि उसे हमारे अनुकूल गतिविधि ही अपनानी पड़े । गायत्री उपासना से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐसे ही मानसिक चुम्बक तत्त्व सक्रिय हो उठते हैं । मनोबल बढ़ने से ऐसी विद्युत धारा अन्तर्मन के प्रसुप्त क्षेत्रों में गतिशील हो जाती है कि अब तक अपने प्रयोजन में आया हुआ मस्तिष्कीय चुम्बक सक्रिय हो उठता है और वे उपलब्धियाँ लाकर खड़ी कर देता है । जिन्हें आमतौर से सिद्धियों, विभूतियों का वरदान एवं दैवी सहायता कहा जा सके ।

उपासना में बरती गई तपश्चर्या से द्रवित होकर गायत्री माता ने अमुक सिद्धि या सफलता प्रदान की–यह भावुक भक्त का दृष्टिकोण है । इसी तथ्य का वैज्ञानिक दृष्टिकोण यह है कि कठोर नियम, प्रतिबन्धों का पालन करने से जो प्रतिरोधात्मक क्षमता बढ़ी, उसने मनोबल का विकास किया, उसने अन्तर्मन के प्रसुप्त शक्ति–केन्द्रों का चुम्बकत्व जगाया और उसी जागरण ने अभीष्ट सफलतायें खींचकर सामने लाकर खड़ी कर दीं । मनुष्य अपने आप में एक देवता है । उसके भीतर वे समस्त दैवी शक्तियाँ बीज रूप में विद्यमान रहती हैं जो इस विश्व में अन्यत्र कहीं भी हो सकती हैं । अन्यत्र रहने वाले देवता अपनी निर्धारित जिम्मेदारियाँ पूरी करने में लगे रहते हैं । वे हमारे व्यक्तिगत कामों में इतनी अधिक दिलचस्पी नहीं ले सकते कि अगणित उपासकों या भक्तों की अगणित प्रकार की समस्याओं को सुलझाने में संलग्न हो सकें । यह हल करने की क्षमता हमारे अपने भीतर रहने वाले देवता में ही होती है और उसी को किसी अनुष्ठान द्वारा सशक्त एवं गतिशील बना करके साधक को अपना प्रयोजन वस्तुतः आप पूरा करना पड़ता है ।

गायत्री–उपासना मनुष्य जीवन को बहिरंग एवं अंतरंग दोनों ही दृष्टियों में समृद्ध और समुन्नत बनाने का राजमार्ग है । बाह्य उपचार से बाह्य जीवन की प्रगति होती है, पर अन्तरंग विकास के बिना उसमें पूर्णता नहीं आ पाती । बाहरी जीवन की विशेषतायें छोटा–सा शोक–सन्ताप, रोग, कष्ट, अवरोध, दुर्दिन सामने आते ही अस्त–व्यस्त हो जाती हैं, पर जिस व्यक्ति के पास आंतरिक दृढ़ता, समृद्धि एवं क्षमता है, वह बाहर के जीवन में बड़े से बड़ा अवरोध आने पर भी सुस्थिर बना रहता है और भयानक भँवरों को चीरता हुआ अपनी नाव पार ले जाता है । भौतिक समृद्धि और आत्मिक शांति के लिए उपासना की वैज्ञानिक प्रक्रिया अचूक साधना है और कहना न होगा कि उपासनाओं में सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोपरि एक मात्र गायत्री महामन्त्र की उपासना ही है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शास्त्रकारों ने गायत्री की सर्वोपरि शक्ति, स्थिति और उपयोगिता को एक स्वर से स्वीकार किया है। इस सन्दर्भ में पाये जाने वाले अगणित प्रमाणों में से कुछ नीचे प्रस्तुत हैं–

सर्वेषां जपसूक्तानां ऋचाँश्च यजुषां तथा।
साम्नां चैकाक्षरादीनां गायत्री परमो जपः॥

–वृहत् पाराशर स्मृति

अर्थ–समस्त जप सूत्रों में, समस्त वेद मन्त्रों में, एकाक्षर बीज मन्त्रों में गायत्री ही सर्वश्रेष्ठ है।

इति वेद पवित्राण्य भिहितानि एभ्य सावित्री विशिष्यते।

–शंख स्मृति

अर्थ–यों सभी वेद के मन्त्र पवित्र हैं, पर इन सब में गायत्री मन्त्र सर्वश्रेष्ठ है।

सप्त कोटि महामन्त्रा, गायत्री नायिका स्मृता।
आदि देवा ह्युपासन्ते गायत्री वेद मातरम्॥

–कूर्म पुराण

अर्थ–गायत्री सर्वोपरि सेनानायक के समान है। देवता इसी की उपासना करते हैं। यही चारों वेदों की माता है।

तदित्यृचा समो नास्ति मन्त्रो वेदचतुष्टये।
सर्ववेदाँश्च यज्ञाश्च दानानि च तपांसि च॥
समानि कलया प्राहुर्मुनयो न तदित्यृक्॥

–याज्ञवल्क्य

अर्थ–गायत्री के समान चारों वेदों में कोई मन्त्र नहीं है। समस्त वेद, यज्ञ, दान, तप मिलकर भी एक कला के बराबर भी नहीं हो सकते, ऐसा ऋषियों ने कहा है–

दुर्लभा सर्वमन्त्रेषु गायत्री प्रणवान्विता।
न गायत्र्यधिकं किंचित् त्रयीषुपरिगीयते॥

–हारीत

अर्थ–इस संसार में गायत्री के समान परम समर्थ और दुर्लभ मन्त्र कोई नहीं है। वेदों में गायत्री से श्रेष्ठ कुछ और नहीं है।

नास्ति गंगा समं तीर्थं न देवः केशवात्परः।
गायत्र्यास्तु परं जाप्यं न भूतं न भविष्यति॥

–अत्रि

अर्थ–गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं, केशव के समान कोई देवता नहीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री से श्रेष्ठ कोई जप न कभी हुआ है और न कभी होगा ।

गायत्री सर्वमन्त्राणां शिरोमणिस्तथा स्थिता ।
विद्यानामपि तेनैतां साधने सर्वसिद्धये ।।
त्रिव्याहृतियुतां देवीमोंकारयुगसम्पुटाम् ।
उपास्यचतुरो वर्गान्साधयेद्यो न सोऽन्धधीः ।।
देव्या द्विजत्वमासाद्य श्रेयसेऽन्यरतास्तु ये ।
ते रत्नानिवांछन्ति हित्वा चिंतामणिं करात् ।।

—महा वार्तिक

अर्थ—गायत्री सब मन्त्रों तथा सब विद्याओं में शिरोमणि है । उससे इन्द्रियों की साधना होती है । जो व्यक्ति इस उपासना के द्वारा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पदार्थों को प्राप्त करने से चूकते हैं वे मन्द—बुद्धि हैं । जो द्विज गायत्री मन्त्र के होते हुए भी अन्य मन्त्रों की साधना करते हैं वे ऐसे ही हतभागी हैं जैसे कि चिन्तामणि को फेंककर छोटे—छोटे चमकीले पत्थर ढूँढने वाले ।

यथा कथं च जप्तैषा त्रिपदा परम पावनी ।
सर्वकामप्रदा प्रोक्ता विधिना किं पुनर्नृप ।।

अर्थ—हे राजन ! जैसे—तैसे उपासना करने वाले की भी गायत्री माता कामना पूर्ण करती है, फिर विधिवत् साधना करने के सत्परिणामों का तो कहना ही क्या है ।

कामान्दुग्धे विप्रकर्षत्यलक्ष्मी,
पुण्यं सूते दुष्कृतं य हिनस्ति ।।
शुद्धां शान्तां मातरं मंगलानां,
धेनुं धीरां गायत्रीमन्त्रमाहुः ।।

—वशिष्ठ

अर्थ—गायत्री कामधेनु के समान मनोकामनाओं को पूर्ण करती है, दुर्भाग्य, दरिद्रता आदि कष्टों को दूर करती है, पुण्य को बढ़ाती है, पाप का नाश करती है । ऐसी परम शुद्ध—शांतिदायिनी, कल्याणकारिणी महाशक्ति को ऋषि लोग गायत्री कहते हैं ।

प्राचीन काल में महर्षियों ने बड़ी—बड़ी तपस्यायें और योग साधनायें करके अणिमा—महिमा आदि ऋद्धि—सिद्धियाँ प्राप्त की थीं । इनकी चमत्कारी शक्तियों के वर्णन से इतिहास—पुराण भरे पड़े हैं । वह तपस्या थी, इसीलिये महर्षियों ने प्रत्येक भारतीय के लिए गायत्री की नित्य उपासना करने का निर्देश दिया था । गायत्री

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपासना नित्य-नियमित रूप से की जानी चाहिए । त्रिकाल संध्या में प्रातः, मध्यान्ह और सायं तीन बार उसी की उपासना करने का नित्यकर्म शास्त्रों में आवश्यक बतलाया गया है ।

पौराणिक कथा प्रसंगों में भी स्थान-स्थान पर गायत्री उपासना द्वारा उल्लेखनीय आध्यात्मिक भौतिक सफलतायें प्राप्त करने के आख्यान मिलते हैं । इस युग में भी ऐसे बहुत से गायत्री उपासक हुए हैं जो सर्व-शक्तिमान गायत्री का आश्रय लेकर सांसारिक विभूतियाँ और सिद्धियाँ अर्जित कर सुख-शांति और लोकयश के शिखर तक पहुँचे । कई उपाख्यान अटपटे से हैं, पर उनमें भी गायत्री उपासना के सुनिश्चित सत्परिणामों का संकेत मिलता है ।

गायत्री कथा-प्रसंगों में

यजुर्वेद में गायत्री महामन्त्र को एक विचित्र वृषभ के रूप में अलंकृत किया गया है-

चत्वारिश्रृंगा त्रयो अस्य पादा,
द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽअस्य ।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति,
महादेवो मर्त्यां आविवेश ।।

-यजु० १७/९१

चार सींग वाला, तीन पैर वाला, दो सिर वाला, सात हाथों वाला, तीन जगह बंधा हुआ यह गायत्री महामन्त्र रूपी वृषभ जब दहाड़ता है तब महान् देव बन जाता है और अपने सेवक का कल्याण करता है ।

चार वेद-चार सींग । आठ-आठ अक्षरों के तीन चरण अर्थात् तीन पैर । ज्ञान और विज्ञान दो सिर । सात व्याहृतियाँ, सात हाथ, जिनके द्वारा सात विभूतियाँ मिलती हैं, ज्ञान, कर्म, उपासना से तीन जगह बँधा हुआ यह महामंत्र रूपी बैल जब दहाड़ता है, उच्चारण होता है तो देवत्व की दिव्य परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं और सान्निध्य में रहने वाला व्यक्ति सब कुछ पा जाता है ।

गायत्री के २४ अक्षरों को दक्ष प्रजापति की, परब्रह्म की २४ कन्यायें बताया गया है । इनका पाणिग्रहण धर्म ने किया, ऐसा लिखा है । इसमें यह संकेत है कि धर्मात्मा व्यक्ति इस महाशक्ति की २४ उपलब्धियों से लाभान्वित हो सकता है ।

चतुर्विंशति कन्याश्च सृष्टवान् दक्ष उत्तमः ।
श्रद्धा लक्ष्मीर्धृतिस्तुष्टिः पुष्टिर्मेधा क्रिया तथा ।।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिर्ऋद्धिः कीर्तिस्त्रयोदशी ।
पत्न्यर्थं प्रतिजग्राह धर्मो दाक्षायणः प्रभुः ।।

—गरुड़ पुराण

दक्ष ने चौबीस कन्याओं को जन्म ग्रहण कराया था । जिनके शुभ नाम श्रद्धा, लक्ष्मी, धृति, पुष्टि, तुष्टि, मेधा, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, वपु, शांति, ऋद्धि, कीर्ति आदि थे । इनका दाक्षायण प्रभु धर्म ने अपनी पत्नियाँ बनाने के लिए ग्रहण किया था ।

देवी भागवत के अश्वपति उपाख्यान में अनुदान का वर्णन इस प्रकार आता है—

ततः सावित्र्युपाख्यानं तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ।
पुरा केन समुद्भूता सा श्रुता च श्रुतेः प्रसूः ।।
केन वा पूजिता लोके प्रथमे कैश्च वा परे ।।
ब्रह्मणा वेदजननी प्रथमे पूजिवा मुने ।
द्वितीये च वेदगणैस्तत्पश्चाद्विदुषां गणैः ।।
तदा चाश्वपतिर्भूपः पूजयामास भारत ।
तत्पश्चात्पूजयामासुर्वर्णाश्चत्वार एव च ।।

—देवी भागवत (सावित्री उपाख्यान)

नारदजी ने भगवान से पूछा— प्रख्यात हैं कि श्रुतियाँ गायत्री से उत्पन्न हुई हैं, कृपा करके उस गायत्री की उत्पत्ति बताइये ।

भगवान ने कहा— वेद जननी गायत्री की उपासना सर्वप्रथम ब्रह्माजी ने की, फिर देवता उनकी आराधना करने लगे । फिर विद्वान्, ज्ञानी—तपस्वी उसकी साधना करने लगे । राजा अश्वपति ने विशेष रूप से उसकी तपश्चर्या की और फिर तो चारों ही वर्ण उस गायत्री की उपासना में तत्पर हो गये ।

महाभारत वन पर्व में भगवती सावित्री के अग्निहोत्र की अग्नि में से प्रकट होने और राजा की साधनायुक्त उपासना से प्रसन्न होकर उसे वरदान देने की चर्चा इस प्रकार आती है—

रूपिणी तु तदा राजन् दर्शयामास तं नृपम् ।
अग्निहोत्रात् समुत्थाय हर्षेण महतान्विता ।।
उवाच चैनं वरदा वचनं पार्थिवं तदा ।
सा तमश्वपतिं राजन् सावित्रीनियमेस्थितम् ।।

—महाभारत वन पर्व

राजन् ! तब मूर्तिमयी सावित्री देवी ने अग्निहोत्र की अग्नि से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकट होकर बड़े हर्ष के साथ राजा को प्रत्यक्ष दर्शन दिया और वर देने के लिए उद्यत हो अनुष्ठान के नियमों में स्थित उस राजा अश्वपति से इस प्रकार कहा–

ब्रह्मचर्येण शुद्धेन दमेन नियमेन च ।
सर्वात्मना च भक्त्या च तुष्टास्मि तव पार्थिव ।।

सावित्री ने कहा–राजन् ! मैं तेरे विशुद्ध ब्रह्मचर्य, इंद्रिय संयम, मनो–निग्रह तथा संपूर्ण हृदय से की हुई भक्ति के द्वारा बहुत सन्तुष्ट हुई हूँ ।

इसी उपाख्यान में महर्षि पाराशर ने अश्वपति को गायत्री महाशक्ति का माहात्म्य तथा उपासना विधान विस्तारपूर्वक बताया है । राजा की बन्ध्या पत्नी को सुसंतति प्राप्त होने तथा अन्य भौतिक एवं आत्मिक लाभ मिलने की चर्चा भी इसी प्रसंग में आती है ।

दुर्भिक्ष निवारण के लिए गायत्री महाशक्ति का उपयोग करने का प्रसंग भी देवी भागवत में आता है, जिसमें महर्षि द्वारा सामूहिक गायत्री उपासना के निर्देश तथा उसके पुण्य प्रतिफल से उस कष्ट–निवारण का उल्लेख है–

कदाचिदथ काले तु दशपंचसमा विभो ।
प्राणिनां कर्मवशतो नववर्ष शतक्रतुः ।।
अनावृष्ट्याऽतिदुर्भिक्षमभवत्क्षयकारकम् ।।
गृहे गृहे शवानां तु संख्या कर्तुं न शक्यते ।।
ब्राह्मणाः बहवस्तत्र विचारं चक्रुः रुत्तमम् ।
तपोधनो गौतमोऽस्ति स नः खेदं हरिष्यति ।।
सर्वेमिलित्वा गंतव्यं गौतमस्याश्रमेऽधुना ।
गायत्रीजपसंसक्तगौतमस्याश्रमेऽधुना ।।
इति सर्वान्समाश्वास्य गौतमो मुनिराट् तदा ।
गायत्रीं प्रार्थयामास भक्तिसन्नद्धचेतसा ।।
पूर्णपात्र ददौ तस्मै येन स्यात्सर्वपोषणम् ।।
उवाच मुनि मंबा सा यं कामं त्वमिच्छसि ।।
तस्य पूर्तिकरं पात्रं मया दत्तं भविष्यति ।
इत्युक्त्वाऽन्तर्दधे देवो गायत्री परमा कला ।।
अन्नानां राशयस्तस्मान्निर्गताः पर्वतोपमाः ।
इत्थं द्वादशवर्षाणि पुपोष मुनिपुंगवान् ।।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुत्रवन्मुनिराड्गर्वगंधेन परिवर्जितः ।
यत्रसर्वैर्मुनिवरैः पूज्यते जगदम्बिका ।।
त्रिकालं परया भक्त्या पुरश्चरणकर्मभिः ।।

—देवी भागवत

व्यासजी ने जनमेजय से कहा— एक बार पन्द्रह वर्षो तक वर्षा नहीं हुई । इस अनावृष्टि के कारण भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा । असंख्य प्राणी भूख से तड़प कर मर गये, उनकी लाशें घरों में सड़ने लगीं ।

तब सज्जनों ने इकट्ठे होकर विचार किया कि गायत्री के परम उपासक तपोनिष्ठ गौतम के पास चलना चाहिए, वे इस विपत्ति को दूर कर सकेंगे । वे सब मिलकर गौतम के पास गये और कष्ट सुनाया ।

आगन्तुकों को सम्मानपूर्वक आश्वासन देकर गौतम ऋषि ने सर्व—शक्तिमान गायत्री से उस संकट के निवारण के लिए प्रार्थना की ।

जगद्माता गायत्री ने प्रसन्न होकर गौतम ऋषि को समस्त प्राणियों का पोषण कर सकने में समर्थ एक पूर्णपात्र दिया और कहा—इससे तुम्हारी समस्त अभीष्ट कामनायें पूर्ण हो जाया करेंगी । यह कहकर वेदमाता अन्तर्ध्यान हो गयीं और उस पात्र की कृपा से अन्न के पर्वतों जैसे ढेर लग गये ।

गौतम ऋषि ने आगन्तुकों को गायत्री का एक परम तीर्थ बतला दिया, जहाँ रहकर वे सब गायत्री माता के पुरश्चरण भक्तिपूर्वक करने में संलग्न हो गये ।

गायत्री उपासना से ब्रह्मवर्चस की प्राप्ति

एक समय की बात है कि पृथ्वी पर घोर दुष्काल पड़ा । अनावृष्टि के कारण सब ओर सूखा दिखाई पड़ने लगा । बड़े—बड़े सरोवर भी सूख गये । पशु—पक्षी सभी जल के लिए भटकने लगे । घरों में मनुष्यों की लाशें सड़ने लगीं । नीचे से पृथ्वी का रस सूखा और ऊपर से सूर्य का ताप इतना बढ़ा कि अग्नि वर्षा—सी होने लगी ।

यह बात सभी जानते थे कि महर्षि गौतम की तप—शक्ति बहुत बढी—चढ़ी थी । गौतम गायत्री के उपासक थे । सर्वत्र घोर दुर्भिक्ष होते हुए भी उनके आश्रम की भूमि सुरक्षित थी । वहाँ पर जल और अन्न की कोई कमी नहीं थी ।

इस स्थिति में बहुत से ब्राह्मण एकत्र होकर महर्षि के आश्रम पर पहुँचे और कुशल प्रश्न के अनन्तर उन्होंने अपना कष्ट कह सुनाया । महर्षि ने उन्हें हर प्रकार सान्त्वना दी और उनसे वहीं रहने का अनुरोध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किया । तदनन्तर महर्षि ने भगवती गायत्री से प्रार्थना की । अम्बे ! मैं तुम्हें बारम्बार नमस्कार करता हूँ । तुम प्राणियों की विपत्तियों को दूर करने में समर्थ हो । इस घोर दुर्भिक्ष के समय में भी प्राणियों की सेवा कर सकूँ, ऐसा बल दो । जगत् जननी तुम्हीं इस घोर संकट से उद्धार करने वाली हो ।

माता गायत्री ने कहा—महर्षि ! मैं तुम्हें अक्षय—पात्र देती हूँ । कल्प वृक्ष के समान यह पात्र तुम्हारी इच्छित वस्तुओं से सदा पूर्ण रहेगा'। वही हुआ । अक्षय पात्र के द्वारा अन्न, वस्त्र, आभूषण, धन—धान्य सभी के ढेर लग गये । ब्राह्मणों की पत्नियाँ श्रेष्ठ वस्त्रालंकारों में देवांगनायें जैसी लगने लगीं । महर्षि जब जिस वस्तु की इच्छा करते तभी उस वस्तु को अक्षय पात्र पूर्ण कर देता । उस समय वह आश्रम चारों ओर सौ—सौ योजन बढ़ गया था और वहाँ की शोभा इन्द्रपुरी से भी बढ़ी—चढ़ी हो गयी ।

उस समय गौतम नगरी में यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म विधिवत् होते थे । देवगण भी यज्ञ भाग पाते हुए प्रसन्न थे । गौतम का यश सर्वत्र छा गया था । देवराज इन्द्र ने भी अपनी सभा में इनकी अत्यन्त प्रशंसा की । भगवती गायत्री के अनुग्रह से बारह वर्षों तक परिवारों का भरण—पोषण करते रहे ।

महर्षि गौतम की प्रशंसा सर्वत्र फैल गयी । उन्होंने प्राणी—मात्र के कल्याण की जो प्रार्थना भगवती गायत्री से की थी, उसके फलस्वरूप जलवृष्टि और धन—धान्यादि की उत्पत्ति होने लगी । सूर्य का ताप अपनी विकरालता छोड़कर पूर्वमान पर आ गया । इससे उत्पन्न हुए उत्कर्ष को कुछ ईर्ष्यालु व्यक्ति सहन न कर सके, उन्होंने माया की एक गौ निर्मित की जिसकी देह जीर्ण—शीर्ण थी । उनकी प्रेरणा से वह गौ महर्षि के आश्रम के सामने जाकर मर गई । तब उन दुष्टों ने उसकी हत्या का आरोप महर्षि पर लगाने की चेष्टा की ।

महर्षि को इस कार्य से अत्यन्त क्षोभ हुआ । वे नेत्र मूँदकर समाधि में लीन हो गये तब उन्हें इस चाल का पता लग गया । समाधि भंग होने पर महर्षि ने उन्हें शाप दिया—मूर्खो ! तुम अपने कर्म का फल भोगो और वेदादि कर्म से विमुख हो अधो गति प्राप्त करो ।

शाप के कारण उन ईर्ष्यालु व्यक्तियों का सभी ज्ञान लुप्त हो गया था, उन्होंने जो कुछ अध्ययन आदि किया था उस सबको भी भूल गये, उनका सम्मान नष्ट हो गया, समाज में उनकी प्रतिष्ठा न रही । मनुष्य उनसे घृणा करने लगे ।

अब उन्हें अपने दुष्कर्म पर पश्चाताप होने लगा । वे उस स्थिति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से मुक्त होने का उपाय सोचने लगे । जब कोई युक्ति न सूझी तब वे झिझकते हुए, सिर झुकाये महर्षि के आश्रम में पहुँचे और उनके चरण पकड़ कर क्षमा-याचना करने लगे । उन्होंने कहा- महर्षि ! हम से भीषण अपराध हो गया, परन्तु आप उदार मन वाले हैं, हमारे दुष्कर्म को क्षमा कर दीजिए । हे ऋषि श्रेष्ठ ! हम पर प्रसन्न हो जाइये ! हमारे अपराध को भूल जाइये ।

उनका रुदन सुनकर गौतम का हृदय करुणा से भर उठा । वे बोले-"उपासना से तुम्हारा कल्याण सम्भव है । अतः एकाग्र मन से उन्हीं का जाप करो ।"

उन्हें विदा करने के पश्चात् महर्षि ने सोचा कि इन बेचारों का कोई दोष नहीं था, यह सब प्रारब्ध का ही खेल है । भगवती गायत्री इनका कल्याण करे । यह कहकर वे पुनः भगवती की उपासना करने लग गये । भक्ति-विभोर गौतम को पुनः भगवती के दर्शन हुए तथा उन्होंने माता की स्तुति की और निवेदन किया कि हे अम्बे ! संसार में पुनः समृद्धि छा गई है । सभी प्राणी आपकी कृपा से सुखी हैं । सर्वत्र सम्पत्ति और महान ऐश्वर्य ही दृष्टिगोचर हो रहा है । सभी प्राणी अपने घरों को जा चुके हैं, अब आपका यह अक्षय पात्र मेरे किस काम आवेगा ?

माता ने गौतम के सिर पर स्नेहपूर्वक हाथ फेरा और बोली-'गौतम मेरी दी हुई भक्ति सदा तुम्हारे पास रहे ।'

गौतम बोले-'मातेश्वरी ! तुम्हारी यह सिद्धि अब मैं अपने पास रखने का इच्छुक नहीं हूँ । अब लोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति में इसका उपयोग करना चाहते हैं, इससे मेरी लोकमंगल की साधना में बाधा उत्पन्न होती है ।' माता ने महर्षि का हृदय भाव समझ लिया और बोली-'जैसी तुम्हारी इच्छा होगी वही होगा ।' ऐसा कहकर मातेश्वरी अन्तर्ध्यान हो गई । महर्षि की इच्छानुसार अक्षय पात्र की शक्ति समाप्त हो गई । आश्रम में इन्द्रपुरी-सी शोभा विराजमान थी, वह अब नितांत नीरव एवं शांत हो गया ।

अब महर्षि का मन भी शांत था । वे पुनः भगवती की उपासना में लीन हो गये ।

आश्रम में आगन्तुकों की भीड़ अभी भी लगी रहती थी, पर उनमें सांसारिक कामनाओं से ग्रस्त याचक अधिक होते थे । महर्षि उन्हें सान्त्वना तो देते, पुरुषार्थ का, प्रायश्चित का मार्ग भी सुझाते, किन्तु केवल शारीरिक और भौतिक सुखों के लिए ब्राह्मी शक्ति का अपव्यय उन्होंने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बन्द कर दिया जिससे निरर्थक भीड़ छटने लगी । अब जो लोग आया करते थे उनमें आत्म-जिज्ञासुओं की संख्या अधिक रहती । महर्षि उन्हें तत्वज्ञान सिखाते, साधनायें कराते और उन्हें आत्म-कल्याण के राजमार्ग पर चलने की रीति-नीति समझाते । इस ब्रह्मविद्या के प्रभाव से धीरे-धीरे सम्पूर्ण प्रदेश से स्वयंमेव दैन्य-दारिद्र मिटता चला गया और सुख-शांति की निर्झरिणी प्रवाहित हो उठी । भगवती गायत्री की उपासना और उनकी कृपा पाकर देश निहाल हो गया, साथ ही महर्षि गौतम की तप साधना भी सार्थक हो गई ।

गायत्री-साधना से वेदज्ञान की प्राप्ति

नारायण तीर्थ नामक स्थान में महर्षि विदग्ध शाकल्य का आश्रम था । वहाँ वे अपने एक हजार शिष्यों के सहित निवास करते थे । महर्षि के एक शिष्य याज्ञवल्क्य भी उन दिनों उन्हीं के पास थे । महर्षि ने उन्हें ऋग्वेद में पारंगत कर दिया था ।

एक दिन आनर्त देश के नरेश सुप्रिय उनके आश्रम पर पहुँचे और वहाँ की सुख-शांति देखकर कुछ दिन वहाँ रहकर ऋषि-मुनियों का सत्संग करने की उन्हें इच्छा हुई । महर्षि ने उनके निवास के लिए अपनी आश्रम-भूमि में ही व्यवस्था कर दी और एक विद्यार्थी को यह कार्य सौंपा कि वह नित्य प्रति राजा सुप्रिय का अभिषेक कर उन्हें सुखी रहने का आशीर्वाद दिया करे ।

नित्य की भाँति आज भी याज्ञवल्क्य राजा को शुभाशीष देने के लिए गये, परन्तु राजा को नित्य कर्म से निवृत्त होने में देर हो गई । उन्होंने नम्रता से कहा-ऋषिवर ! आप कुछ देर रुकें ।

याज्ञवल्क्य ने सोचा कि आश्रम-जीवन में आलस्य नहीं करना चाहिए । उन्होंने राजा से भी ऐसा कहा कि- 'राजन् ! यह आश्रम-जीवन है । इसमें एक-एक क्षण बहुमूल्य है ।'

राजा पर इसका उल्टा प्रभाव पड़ा । उसने सोचा कि यह विद्यार्थी अभिमानी है । वह बोला-'ऋषि कुमार ! 'यदि तुम रुकना नहीं चाहते तो सामने पड़े लक्कड़ पर जल डालकर चले जाओ ।'

याज्ञवल्क्य ने ऐसा ही किया । सूखे लक्कड़ पर पानी डालकर चले गये । सायंकाल में राजा की दृष्टि उस पर पड़ी । लक्कड़ हरा हो गया और उसमें नवीन पत्तियाँ तथा फल-फूल लग गये । यह देख राजा अत्यन्त आश्चर्य चकित हो गये । उन्होंने सोचा- मैंने यह स्वर्ण अवसर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गवाँ दिया । जिस जल ने इस शुष्क काष्ठ को हरा भरा कर दिया यदि मुझ पर पड़ता तो क्या मुझे भी सब प्रकार सुखी न कर देता ।

राजा के मन की अशांति बहुत बढ़ गई । वे स्वयं महर्षि की सेवा में उपस्थित हुए । विदग्ध शाकल्य ने राजा को सादर आसन दिया और अभिप्राय जानकर याज्ञवल्क्य को समीप बुलाकर बोले–'वत्स ! राजा हमारे अतिथि हैं, इनका इच्छित करना हमारा कर्तव्य है । अतः जिस कार्य से इनका हित हो, वही करो ।'

याज्ञवल्क्य ने नम्रता से कहा– गुरुदेव ! यह तपोभूमि है, यहाँ प्रमादी पुरुष का कल्याण सम्भव नहीं है । राजा के प्रमाद का इन आश्रमवासियों पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा ।

राजा ने याज्ञवल्क्य से क्षमा–याचना की, तब विदग्ध शाकल्य बोले–'वत्स याज्ञवल्क्य ! क्षमा माँगने वाले पर क्रोध कैसा ? अतः राजा पर प्रसन्न होकर इनकी कामना पूर्ण करो ।'

याज्ञवल्क्य बोले–'गुरुदेव ! राजा मेरे सामने नहीं, मेरे चमत्कार के सामने झुका है । मैं इनके हित में कुछ कर सकूँ यह सम्भव नहीं है ।

विदग्ध शाकल्य क्रोधित हो उठे, उन्होंने कर्कश स्वर में कहा– 'अरे मूर्ख ! मिथ्याभिमानवश हमारा अपमान कर रहा है । ऐसे प्रमादी शिष्य का इस आश्रम में कोई काम नहीं है । अतः तू मुझसे प्राप्त वेद विद्या को मुझे लौटाकर यहाँ से चला जा ।'

याज्ञवल्क्य ने सोचा–'जो गुरुजन अभिमान के वशीभूत होकर अनुचित आज्ञा दें, उनसे विलग हो जाना ही उचित है ।

विदग्ध शाकल्य से प्राप्त ऋग्वेद विद्या को लौटाकर याज्ञवल्क्य वहाँ से चल दिये । भ्रमण करते हुए कई मास व्यतीत हो गये । एक दिन वे प्रभास तीर्थ के निकट पहुँचे, वहाँ उनके नाना महर्षि वैशंपायन निवास करते थे । महर्षि से याज्ञवल्क्य ने अपना सब वृत्तान्त कहा और उनकी आज्ञा पाकर उन्हीं के पास रहने लगे ।

वैशंपायन ने याज्ञवल्क्य को यजुर्वेद की शिक्षा दी । अल्पकाल में ही वे यजुर्वेद के पूर्ण ज्ञाता हो गये । उनकी दव्य प्रतिभा से वैशंपायन अत्यन्त प्रसन्न हुए और वे शीघ्र ही आश्रम के कुलगुरु घोषित कर दिये गये ।

इसके पश्चात् एक दिन सुमेरु पर्वत पर महर्षियों की एक वृहद सभा हुई । उसकी सूचना सात दिवस पूर्व प्रसारित की गई और उनमें सम्मिलित न होने वाले को ब्रह्म–हत्या लगने की बात कही गई । यह जानकर महर्षि वैशंपायन ने वहाँ जाने का विचार किया, परन्तु चलने की शीघ्रता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में किसी प्रकार उनका पाँव एक शिशु पर पड़ गया और उसकी मृत्यु हो गई । इस प्रकार बाल हत्या तो लगी ही, साथ ही सभा में जाना स्थगित करने के कारण ब्रह्म–हत्या का पाप और लग गया ।

वृद्धावस्था और कृश शरीर के कारण प्रायश्चित की महर्षि में शक्ति न रही । अतः उन्होंने याज्ञवल्क्य से कहा कि किसी विद्यार्थी से इसका प्रायश्चित कराओ ।'

याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया–'भगवन् ! इन विद्यार्थियों की शक्ति सीमित है, यदि मुझे प्रायश्चित करने की आज्ञा दें तो मैं इस कार्य को भली प्रकार पूर्ण कर सकूँगा ।'

महर्षि ने समझा याज्ञवल्क्य को बड़ा अभिमान हो गया है, यह अन्य शिष्यों को अत्यन्त निस्तेज समझता है । अतः वे बोले–याज्ञवल्क्य ! तू इन विद्यार्थियों को इतना हीन समझता है कि इनका अपमान करने में नहीं चूका । अतः मुझे तेरे जैसे अभिमानी शिष्य का त्याग करना ही उचित लगता है । तू मेरी दी हुई वेद–विद्या को लौटाकर चाहे जहाँ चला जा ।'

याज्ञवल्क्य को इससे बड़ा दुःख हुआ । उन्होंने कहा कि 'प्रभो ! मेरे मन में आपके प्रति अत्यन्त भक्ति–भाव था, उसी के वशीभूत होकर मैंने ऐसा कहा है । इन विद्यार्थियों का निरादर करने का मेरा किंचित अभिप्राय न था ।'

परन्तु वैशम्पायन का क्रोध शांत न हुआ । याज्ञवल्क्य ने उनसे प्राप्त हुआ यजुर्ज्ञान लौटा दिया और भारी हृदय से आश्रम त्यागकर चल दिये ।

भ्रमण करते हुए याज्ञवल्क्य विश्वामित्र तीर्थ में पहुँचे । वहाँ उनके पिता देवरात तप करते थे । पुत्र को आया देखकर वे प्रसन्न हुए । उन्होंने याज्ञवल्क्य की दुःख–कथा सुनकर उन्हें सान्त्वना देते हुए कहा–'पुत्र ! हमारे वंश से अब तक कोई भी निराश नहीं हुआ, क्योंकि हमारे कुल–गोत्र के आदि प्रवर महर्षि विश्वामित्र हैं । उन्होंने गायत्री साधना द्वारा महान् ब्रह्मवर्चस्व को प्राप्त किया है । उसी गायत्री मन्त्र के द्वारा तुम्हारे मन का पूर्ण विषाद और निराशा शीघ्र ही दूर हो जायगी ।'

याज्ञवल्क्य ने पूछा–'पिताजी ! महर्षि विश्वामित्र क्षत्रिय हैं, यह हमारे कुल के आदि प्रवर किस प्रकार हुए ?

देवरात ने उत्तर दिया–'महर्षि अंगिरा के वंश में अजीगर्त नामक एक पुरुष हुए । उनके तीन पुत्र थे । शुनःपुच्छ, शुनःशेप और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शुनोलांगूल । राजा रोहिताश्व ने शुनःशेप को यज्ञ पशु के रूप में क्रय किया, उसे जाते समय मार्ग में विश्वामित्र का आश्रम मिला तब शुनःशेप ने उनसे प्राण रक्षा की प्रार्थना की । महर्षि ने राजा रोहिताश्व से उसे मुक्त कराया और अपने दत्तक पुत्र के समान रखा । वह शुनःशेप ही मेरे पिता थे, मैंने भी गायत्री मन्त्र द्वारा भगवान सविता देव को प्रसन्न कर उन्हीं के समान तेजस्वी पुत्र की याचना की थी । तुम भी उन्हीं सविता देव की उपासना करो, वही तुम्हारा कल्याण करेंगे ।

पिता की आज्ञा पाकर याज्ञवल्क्य ने गायत्री साधना आरम्भ की तब सविता देव प्रसन्न हुए । उन्होंने प्रकट होकर वर माँगने को कहा । याज्ञवल्क्य ने उन्हें बारम्बार प्रणाम किया और बोले—प्रभो ! आप अन्तर्यामी हैं, मेरी कामना आप से छिपी हुई नहीं है । मैं समस्त वेदशास्त्रों के ज्ञान की याचना करता हूँ, यही मुझे प्रदान करो ।

इच्छित वर देकर सविता देव अन्तर्घ्यान हो गये। उसी समय से याज्ञवल्क्य के हृदय में सूर्य के समान ही अलौकिक ज्ञान ज्योति प्रकट हुई और वे सम्पूर्ण वेदशास्त्रों के ज्ञाता हो गये ।

ध्रुव को परमपद मिला

देवी भागवत् में ऐसी अनेक कथायें मिलती हैं जिनमें इस तथ्य का प्रतिपादन है कि देव, दानव, ऋषि—मुनि, पुरुष और स्त्रियाँ समय—समय पर माता का आश्रय ग्रहण करके दुःखों से सुखों की ओर, अशांति से शांति की ओर अग्रसर होने में समर्थ होते रहे हैं ।

अनेक देवताओं ने तथा महापुरुषों ने भी अपने अनुभव की चर्चा इसी प्रकार की हैं, जिससे महा महिमामयी माता की महत्ता का प्रतिपादन होता है और इस तथ्य का समर्थन होता है कि इस कल्पवृक्ष के नीचे बैठने वाले की कामनायें पूर्ण ही होती रही हैं । इस कामधेनु का पय—पान करने वाला सदैव अतृप्तियों की क्षुधाओं से छुटकारा पाकर पूर्ण रूप ही बना है । यह उद्धरण हमारी श्रद्धा को जागृत करते हैं कि उपासना में तथा जीवन साधना में उन तत्वों का समावेश करें, जिनका प्रतिपादन गायत्री तत्व ज्ञान के अन्तर्गत किया गया है ।

ध्रुव कुमार अपना अनुभव सुनाते हुए राजाओं से महा महिमामयी सावित्री (गायत्री) का प्रभाव—परिणाम बताते हुए निर्देश करते हैं कि उपासना सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वोपरि है—

किं ब्रवीमि महिपालाअस्याश्चरितमुत्तमम् ।
ब्रह्मादया न जानन्ति सेशाः सुरगणास्तथा ।।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ध्रुव कुमार से जब गायत्री का माहात्म्य पूछा गया तो उसने राजाओं से कहा—हे नृपगण ! मैं उस सावित्री देवी के अत्युत्तम चरित्र के विषय में क्या वर्णन करूँ । उसका चरित्र ऐसा अप्रमेय है कि ब्रह्मादि बड़े—बड़े देवगण उसे नहीं जानते हैं ।

सर्वस्याद्या महालक्ष्मीर्वरेण्या शक्ति उत्तम ।
सात्त्विकीयं महीपाला जगपालनतत्परा ।।३६।।

हे नृपगण ! यह देवी परम सात्विकी, सबसे आद्य, महालक्ष्मी, वरेण्या और उत्तम शक्ति स्वरूपा है तथा इस जगत् के पालन, रक्षण करने में सर्वदा तत्पर रहा करती है ।

सृजते वा रजोरूपा सत्वरूपा च पालने ।
संहारे च तमो रूपा त्रिगुणा सा सदा मता ।।
निर्गुणा परमा शक्तिः सर्वकाम फल प्रदा ।
सर्वेषां कारणं सा हि ब्रह्मादीनां नृपोत्तमाः ।।
निर्गुणा सर्वथा ज्ञातुमशक्या योगिभिर्नृपाः ।।

वह सावित्री देवी रजोगुण के स्वरूप वाली इस जगत् का सृजन किया करती है और सत्वगुण का स्वरूप धारण करके इसका पालन करती है । जब इस प्रपंचात्मक विश्व का वह संहार करके लय करना चाहती है तो तमोगुण के रूप को धारण कर लेती है । इसके सर्वदा त्रिगुण सम्पन्न स्वरूप माने गये हैं । इसका जो निर्गुण स्वरूप है उसमें परम शक्ति है और वह समस्त कामनाओं के फलों को प्रदान करने वाली है । हे नृपोत्तमगण ! ब्रह्मा आदि सबका यह कारण स्वरूप है । हे नृपगण ! इसका निर्गुण स्वरूप तो बड़े—बड़े योगियों के द्वारा भी नहीं जाना जा सकता है ।

यस्येच्छया सृजति विश्वमिदं प्रजेशो नानावतारकलनं कुरुते हरिश्च । नूनं करोति जगतः किल भस्म शम्भुस्तां शर्मदां न भजतेनु कथं मनुष्यः ।।

जिसकी इच्छा से प्रजा का स्वामी ब्रह्मा इस सम्पूर्ण विश्व का सृजन किया करते हैं तथा भगवान हरि अनेक अवतार धारण करते हैं एवं भगवान शम्भु इस जगत को संहार करके भस्म कर देते हैं । यह मनुष्य कैसा है जो ऐसी कल्याणकारिणी सावित्री देवी का भजन नहीं किया करता है ।

नारदजी की जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए भगवान विष्णु ने देवर्षि नारद से कहा था कि सर्वोपरि उपास्यतत्व भगवती ही हैं । उसका आश्रय लेने वाला समस्त अशांतियों से छुटकारा पा सकता है और अपनी आत्मिक तथा भौतिक प्राप्ति का पथ प्रशस्त कर सकता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है । प्राचीनकाल के महामानवों की भाँति इस समय भी सर्वसाधारण के लिये इसी महान् आश्रय का अवलम्बन करना उचित है ।

देव देव ! महादेव ! पुराण पुरुषोत्तम ।
जगदाधार सर्वज्ञ ! श्लाघनीयोऽसि सद्गुणैः ।।
जगतस्तत्वमाद्यंयत्तन्मे वद यथेप्सितम् ।
जायते कुत एवेदं कुतश्चेदं प्रतिष्ठितम् ।।
कुतन्स्तं प्राप्नुमःकाले कुत्र सर्वफलोदयः ।
केन ज्ञातेन मायैषा मोहभूर्नशिमाप्नुयात् ।।
कयार्चया किं जपेन किंध्यानेनात्महृत्कजे ।
प्रकाशो जायते देव तमस्यर्कोदयो यथा ।।
एतत्प्रश्नोत्तरं देव ब्रूहि सर्वमशेषतः ।
यथा लोकस्तरेदन्धतमर्स त्वन्जसैवहि ।।

अर्थ-एक समय देवर्षि नारदजी ने भगवान नारायण के समीप में उपस्थित होकर उनसे पूछा था- हे परम देवों के भी देव ! आप तो श्रेष्ठतम एवं परम पुराण पुरुष हैं तथा इस समस्त जगत् के आधार और सभी कुछ के ज्ञाता है । आप इस जगत का, जो आद्य तत्व हो, वह मुझे बताइये, इसकी उत्पत्ति कहाँ से होती है ? किस में यह प्रतिष्ठित हैं तथा कैसे इसका अन्त होता है ? समस्त फलों का उदय कहाँ से होता है, किसका ज्ञान प्राप्त कर लेने पर मोह की भूमि इस माया का नाश होता है ? किस जप, ध्यान, अर्चना से अन्धकार में सूर्योदय की भाँति हृदय में प्रकाश होता है ? हे भगवान् ! आप कृपाकर इन मेरे प्रश्नों का उत्तर प्रदान कीजिए, जिससे यह लोक इस अन्धकार से आसानी से तर जावे ।

एवं देवर्षिणा पृष्टः प्राचीनो मुनिसत्तमः ।
नारायणो महायोगी प्रतिनन्द्य वचोऽब्रवीत ।।
श्रृणु देवर्षिवर्यात्र जगतस्तत्वमुत्तमम् ।।
येन ज्ञातेन मर्त्योहि जाप न जगत भ्रमे ।।
जगत स्तत्वमित्येव देवी प्रोक्ता मयामि हि ।
ऋषिभि र्देव गन्धर्वे रन्यैश्चापि मनीषिभिः ।।
सा जगत् सृजते देवी तयाच प्रति पाल्यते ।
तयया च नाश्यते सर्वमिति प्रोक्तं गुणत्रयात् ।।
तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि देव्याः सिद्धर्षि पूजितम् ।
स्मरतां सर्वपापघ्न कामदं मोक्षदं तथा ।।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अर्थ—महर्षि व्यासजी ने कहा— इस प्रकार से देवर्षि नारदजी ने जब पुराण पुरुष महायोगी भगवान् नारायण से पूछा तो नारायण ने नारदजी की इस जिज्ञासा का अभिनन्दन करते हुए कहा— हे वर्षे ! इस जगत् का जो उत्तम तत्व है, उसे मैं बतलाता हूँ, तुम श्रवण करो । इस तत्व का ज्ञान प्राप्त कर लेने पर मनुष्य को जगत् का भ्रम नहीं रहता । मैंने बतलाया है कि इस जगत् का तत्व देवी है और यही अन्य देव, ऋषि, गन्धर्व और मनीषियों ने भी बतलाया है । यह देवी ही इस जगत् का सृजन करती है और उसी के द्वारा इसका पालन होता है तथा अन्त में नाश भी वही किया करती है । उसका वह स्वरूप मैं बतलाता हूँ जो सिद्ध ऋषियों के द्वारा समर्पित होता है । इस स्वरूप का स्मरण करने वालों के समस्त पापों का क्षय हो जाता है, सारे मनोरथ सफल होकर इससे मोक्ष की प्राप्ति होती है ।

स्वयम्भुव मनु ने जब यह कामना की कि उन्हें अपनी गोदी में भगवान् जैसा पुत्र खिलाने और सृष्टि आदि का उद्घाटन कर्ता एवं नियम व्यवस्था बनाने का श्रेय प्राप्त हो तो उनकी यह कामना भी माता के सहारे ही पूरी हुई । कामना पूर्ति का उपाय जब मनु ने ब्रह्माजी से पूछा तो उन्होंने भगवती का आश्रय लेने का ही निर्देश दिया और उसका पालन करने पर उन्होंने अभीष्ट भी प्राप्त किया—

त्वाद्यःमनुः स्वायम्भुव स्वाद्या पदमपुत्रः प्रतापवान ।
शतरूपा पतिः श्रीमान् सर्वमन्वन्तराधिपः ।।
स मनुः पितरं देवं प्रजापतिमकल्मषम् ।
भक्त्या पर्यचरत्पूर्व तमुवाचात्मभू सुतम् ।।
पुत्र—पुत्र त्वया कार्यं देव्याराधनमुत्तमम् ।
तत्प्रसादेन ते तात ! प्रजासर्गः प्रसिद्धयति ।।

अर्थ—समस्त मनुष्यों के स्वामी शतरूपा के पति स्वायम्भुव मनु ने अपने पिता की परिचर्चा की थी । उस समय ब्रह्माजी ने उससे कहा— हे पुत्र ! तुमको देवी की आराधना करनी चाहिए । उसी के प्रसाद से प्रजा का सर्ग करने का तुम्हारा कार्य सफल होगा ।

एवमुक्तः प्रजास्रष्टा मनुःस्वायम्भुवो विराट ।
जगद्योनिं तदा देवी तपसाऽतर्पयद् विभुः ।।
तुष्टाव देवीं देवेशीं समाहितमतिः किल ।
आद्यां मायां सर्वशक्तिं सर्वकारणकारणाम् ।।
नमो नमस्ते देवेशि ! जगत्कारणकारणे ।
शंखचक्रगदाहस्ते ! नारायणहृदाश्रिते ।।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एव स्तुता भगवती देवी नारायणी परा ।
प्रसन्ना प्राह देवर्षि ! ब्रह्मपुत्रमिदं वचं ।।

अर्थ–प्रजा के सृजन करने वाले पितामह के द्वारा इस प्रकार से आदेश दिये जाने पर विराट् स्वायम्भु मनु ने इस जगत की समुत्पत्ति करने वाली देवी को उस समय अपनी उत्कृष्ट तपश्चर्या के द्वारा संतृप्त कर दिया था । समाहित बुद्धि वाले मनु ने समस्त देवों की स्वामिनी देवी का स्तवन किया । हे देवेशि ! आप सम्पूर्ण शक्ति से सम्पन्न हैं और सब कारणों के भी कारण स्वरूप वाली हैं, अर्थात् जो इस जगत् के कारण हैं उनको भी आपने समुत्पन्न किया है । हे जगत्कारण कारणे ! आद्यमाये ! आपके चरणों में मेरा प्रणाम है । शंख, चक्र, और गदा को हाथों में धारण करने वाली और भगवान नारायण के हृदय में आश्रय ग्रहण करने वाली हैं । इस प्रकार से मनु के द्वारा स्तुत नारायणी देवी बहुत प्रसन्न हुई और ब्रह्मा के पुत्र स्वायम्भुव मनु से यह वचन बोली–

वरं वरय राजेन्द्र ! ब्रह्मपुत्र ! यदिच्छसि ।
प्रसन्नाहं स्तवेनात्र भक्त्या चाराधनेन च ।।
यदि देवि ! प्रसन्नाऽसि भक्तया चाराधनेनन च ।
तदा निर्विघ्नतः सृष्टि प्रजायाः स्यात्तवाज्ञया ।।
प्रजासर्गः प्रभवतु ममानुग्रहतः किल ।
निर्विघ्नेन च राजेन्द्र ! वृद्धिश्चाप्युत्तरोत्तरम् ।।
यः कश्चित्पठते स्तोत्रं मद्भक्तः त्वकृतं सदा ।
तस्य विद्या प्रजा सिद्धिः कीर्तिः कान्त्युदयः खलु ।।

अर्थ–देवी ने कहा– हे राजेन्द्र ! हे ब्रह्मा के पुत्र ! जो भी तुम चाहते हो वरदान माँग लो ! तुम्हारे इस स्तवन और आराधना से मैं प्रसन्न हूँ । मनुने कहा–यदि आप मुझ पर करुणा कर प्रसन्न हैं तो मैं यही चाहता हूँ कि प्रजा की सृष्टि निर्विघ्न होवे । देवी ने कहा–हे राजेन्द्र ! तेरी सृष्टि की उत्तरोत्तर वृद्धि होगी । मेरा यह स्तवन जो भी कोई पढ़ेगा उसकी भी विद्या और प्रजा की तथा कीर्ति सिद्धि होगी ।

वेद ज्ञान और विज्ञान के उदगम हैं, उनमें विश्व के सुख–शांति और प्रगति के महान् रहस्य छिपे पड़े हैं । ब्रह्माजी ने वेदों का निर्माण किया और उनसे कहा–तुम पग–पग पर भगवती महाशक्ति का प्रतिपालन करना । गायत्री के शीर्ष भाग तथा तीन चरणों को मिलाकर इस महामन्त्र के चार खण्ड किये गये हैं और प्रत्येक खण्ड से एक–एक वेद बनाया गया है । वेद गायत्री की व्याख्या है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और वे अपनी आदि जननी वेदमाता के गुणानुवाद निरन्तर गाते रहते हैं । वेदों की समस्त ऋचाओं को गायत्री की व्याख्या मात्र कहा जाय तो कुछ अत्युक्ति नहीं । गायत्री सम्पूर्ण विद्याओं, सुख और समृद्धि का बीज है, उसे जानकर और कुछ जानना, उसे पाकर और कुछ पाना शेष नहीं रह जाता ।

गायत्री उपासना के मूर्तिमान् चमत्कार
महात्मा आनन्द स्वामी

सुप्रसिद्ध महात्मा आनन्द स्वामी अपने युग के महान् गायत्री उपासकों में से एक थे । आर्य समाज के उच्चपदों पर वे आसीन रहे हैं और सफल पत्रकार माने गये हैं । ९२ वर्ष की आयु तक वे देश–विदेश में गायत्री का प्रचार करते रहे हैं । उनकी अपनी साधना भी ऐसी थी जो उनके मन, वचन और कार्य में समान रूप से उतरी थी ।

उक्त महात्मा आनन्द स्वामी ने 'गायत्री मन्त्र' 'आनन्द गायत्री कथा' आदि अनेक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक पुस्तकें लिखी हैं । उनमें से आनन्द गायत्री कथा में अपने निज के जीवन में प्रकट हुई गायत्री साधना के चमत्कारों का वर्णन है, यह आप बीती सुनने और ध्यान देने योग्य है । उन्हीं के शब्दों में यह अनुभव इस प्रकार है–

'बचपन की बात है, मैं छठी या सातवीं कक्षा में पढ़ता था और बहुत ही बुद्धू था । कुछ नहीं आता था, इस कमजोरी के कारण अध्यापक–गण मुझे घन्टी आरम्भ होते ही बेंच पर खड़ा कर देते थे तथा यह क्रम लगभग प्रत्येक विषय के घन्टे में चलता रहता था । स्कूल से घर आने पर पिताजी मारते थे तथा कहते थे कि तू सर्वथा अयोग्य है, किसी काम का नहीं है । मैं रो–रोकर कहता–पिताजी ! मैं बहूत ध्यानपूर्वक पढ़ता हूँ, किन्तु क्या करूँ, जो पढ़ता हूँ, वह याद नहीं रहता । वे कहते– तू पढ़ता ही नहीं, तू सर्वथा निकम्मा है, मूर्ख है । इस दैनिक अपमान एवं नित्य के पीटे जाने से इतना दुःखी हुआ कि इस छोटी–सी आयु में आत्महत्या की बात सोचने लगा, जीने की कोई इच्छा नहीं रही । सोचा इस दुःख और अपमान से भरे जीवन से तो मर जाना ही अच्छा है । एक दिन बारह बजे स्कूल से छुट्टी हुई तो मैं सीधा उस बरसाती नाले पर गया जो हमारे गाँव के पास बहता था । वर्षा के दिन थे, नदी बाढ़ के पानी से भरी हुई थी तथा पानी तीव्र गति से बह रहा था । मैंने पुल पर खड़े होकर छलांग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लगा दी । दृढ़ निश्चय कर लिया था कि मर जाऊँगा, परन्तु भगवान को इस शरीर से कुछ काम लेना था, इसलिए यत्न करने पर भी मैं मर नहीं सका । गोते खाता हुआ मूर्छा की अवस्था में कोई दो मील नीचे किनारे इस्लामगढ़ के पास जा लगा । वहाँ के लोगों ने मुझे पहचानकर घर पहुँचा दिया ।'

एक दिन आर्य समाज के स्वामी नित्यानन्द हमारे गाँव जलालपुर में आये । हमारे बाग में ठहरे, पिताजी की आज्ञा हुई कि इन्हें तू रोटी खिलाने जाया कर । मैं प्रतिदिन जाता और उन्हें रोटी खिला आता । एक दिन पिताजी ने कहा– जा भैंस को पानी पिला ला । मैं गाँव के बाहर तालाब में पानी पिलाने भैंस को ले गया । भैंस पानी पीकर गहरे पानी में चली गई । मैं छोटा था, उसे बाहर निकालूँ तो कैसे ? बहुत चिल्लाया, ढेले मारे तो भैंस तालाब के दूसरे किनारे पर जाकर निकली तथा बाहर निकलकर जमींदार के खेत में घुस गई । जितनी देर में मैं दूसरी ओर पहुँचा उतनी देर में उसने खेत में लगी फसल का कितना ही भाग नष्ट कर दिया । इधर से मैं भगा हुआ गया, उधर से जमींदार आ गया । मुझे पकड़कर इतना मारा कि हड्डियाँ दुखने लगीं । उस दिन मुझे स्कूल में भी मार पड़ी थी । घर आया तो पिताजी ने क्रोध से कहा कि इतनी देर लगाकर आया है ? और तब उन्होंने भी पीटा । मैं भगवान से प्रार्थना करने लगा कि मैं क्या करूँ ? तभी पिताजी ने कहा–जा बाग में स्वामी जी को रोटी दे आ । मैं रोटी लेकर स्वामीजी के पास पहुँचा, उन्हें खाने को कहा और एक ओर निराश एवं उदास–सा खड़ा रहा । महात्माजी मेरी ओर देखते रहे । भोजन कर चुके तो बोले–खुशहालचन्द्र ! क्या बात है ? तू आज उदास क्यों हैं ? सहानुभूति की बातें सुनकर मेरी आँखों में आँसू आ गये । फूट–फूट कर रो उठा स्वामीजी ने प्यार से मुझे अपनी गोद में बैठा लिया और बोले–तुझे क्या हुआ ? क्यों इतना दुःखी है ? मैंने रोकर सारी कथा उन्हें सुनाई । उन्हें बताया कि यत्न करने पर भी मुझे कुछ याद नहीं होता, मेरी बुद्धि खोटी है । उन्होंने कहा–आ बैठ मेरे पास । मैं इसकी औषधि बताता हुँ । एक कागज लेकर उन्होंने पेन्सिल से गायत्री मन्त्र लिख दिया और बोले–यह है तेरे रोग की औषधि । जब परिवार के सभी लोग सोये हुए हों, प्रातः दो–तीन बजे उठकर स्नान करके इसका जाप किया कर । तब उन्होंने गायत्री

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मन्त्र के अर्थ भी बताये और जो अर्थ उन्होंने बताये वह आज भी मुझे भूले नहीं हैं ।

तभी से मैं प्रातः उठने लगा । जप के लिए बैठने पर नींद आती थी । मेरी चोटी लम्बी थी । मैंने छत में रस्सी बाँध दी तथा उसका दूसरा सिरा अपनी चोटी में बाँध लेता था जिससे झपकी आते ही नींद खुल जाती थी । इस प्रकार ५-६ माह जप करते हो गये तो मैंने इसका प्रभाव देखना प्रारंभ किया । पहले परीक्षा होती थी तो मेरे सभी प्रश्न अशुद्ध हुआ करते थे, अब मैं पास होने लगा । अध्यापकों ने कहा कि तूने अवश्य किसी की नकल की है, तेरी सफलता की आशा न थी ।' मैंने कहा- 'नकल नहीं की ।' मैंने केवल गायत्री मन्त्र का जप किया है । अध्यापकों को सम्भवतः यह बात समझ में नहीं आई, परन्तु इसके बाद परीक्षा में मैं अच्छे नम्बरों से पास होने लगा । इन्हीं दिनों मैंने एक कविता भी लिखी जिस पर हमारे गुरु अध्यापक ने एक पौण्ड पारितोषिक में मुझे दिया । मैंने घर पिताजी को कविता एवं पारितोषिक दिखाया, उन्होंने मुझे एक पौण्ड और इनाम दिया ।

इसके कुछ महीने बाद एक और घटना हुई । आर्य समाज जलालपुर जट्टा का वार्षिक उत्सव था । महात्मा हंसराजजी का एक व्याख्यान इस उत्सव में हुआ । मैंने महात्माजी के व्याख्यान की रिपोर्ट तैयार करके उन्हें दिखाई । उन्होंने पूछा-तू किसका लड़का है ? मैंने कहा-आर्य समाज के मन्त्री लाला गणेशदासजी मेरे पिता हैं । उसी समय मेरे पिताजी आ गये । महात्माजी ने मेरे पिता से पूछा-इस लड़के से क्या कराते हो ? पिताजी ने कहा-यह पढ़ने में अच्छा नहीं है । इसके लिए जुराबें बुनने का कारखाना लगवा दिया है । महात्माजी ने यह सुनकर कहा-'इस काम के लिए यह लड़का ठीक नहीं मुन्शी जी ! इसे मुझको दे दो । मैं इसे उस काम पर लगाऊँगा, जिसके यह योग्य है ।' पिताजी ने कहा-'मैं अस्वीकार कैसे कर सकता हूँ, यह आपका बच्चा है, जैसे आप चाहें करें ।'

इसके कई दिनों बाद महात्माजी का पत्र आया कि खुशहालचन्द्र को लाहौर भेज दो । मैं वहाँ गया, आर्य गजट में ३० रुपया मासिक पर नौकर रख लिया गया । आर्य गजट में कार्य करते हुए इसका सम्पादक भी बना । इन्हीं दिनों मालावार में मोपला विद्रोह हुआ । यवनों ने हजारों हिन्दुओं की गरदनें काट डालीं, कितनों को जबरन मुसलमान बना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिया गया । हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिये कुछ ठोस कदम उठाया जाना आवश्यक था । देश के पत्र–पत्रिकायें इस दिशा में निष्क्रिय थे । हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचार को कोई भी छापना नहीं चाहता था । मैंने अनुभव किया कि इस प्रकार हिन्दू–मुस्लिम एकता कभी स्थापित न होगी । इसका विचार करके हमने हिन्दुओं को संगठित करने एवं परस्पर एकता स्थापित करने के लिए "मिलाप" पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया । इसका उद्देश्य ही था हिन्दू–मुस्लिम एकता, आचरण को उन्नत करने की, सदाचार को प्रोत्साहन देने की, रक्षा करने की आकांक्षा उत्पन्न की जायें ।

माँ की कृपा से मिलाप पत्र का प्रकाशन सफल रहा । आरम्भ में तो एक लाख रुपये का घाटा हुआ, किन्तु इतने पर भी चलता रहा । भगवान की कृपा होने लगी । मोटर–गाड़ियाँ मकान, गाय, भैंस सभी कुछ हो गया । बेटे–बेटियाँ, लाखों की सम्पत्ति सब कुछ मिला, क्योंकि गायत्री माँ ने कहा कि मैं सब कुछ देती हूँ, धन–दौलत, बल–कीर्ति सब कुछ । माँ की कृपा से सब कुछ मिला ।

इन्हीं दिनों लाहौर के अन्दर यूनिवर्सिटी हाल में पंजाब के गवर्नर पर गोली चली । चार युवक पकड़े गये, इन पर गवर्नर की हत्या करने की साजिश का अभियोग चला । मेरा पुत्र रणवीर भी इनमें से एक था । सेशन जज ने फाँसी के दण्ड की आज्ञा सुना दी । तभी एक और दुर्घटना हुई । मैं जोगेन्द्र नगर आर्य समाज के उत्सव पर आया था । एक पत्थर से पाँव फिसल गया । मैं पहाड़ से नीचे जा गिरा, रीढ़ की हड्डी टूट गयी । घायल होकर लाहौर अस्पताल में पहुँचा । सारा शरीर प्लास्टर में जकड़ दिया गया, लोग रणवीर को फाँसी की आज्ञा होने के कारण मेरे पास सहानुभूति प्रदर्शन के लिए आने लगे । सीढ़ियों पर चढ़ते समय वे रोना–सा मुख बना लेते । आँखों में आँसू ले आते, किन्तु वे जब हमारे पास आते तो मैं उन्हें हँसता हुआ मिलता । वे मुझे मुस्कराते हुए देखते तो अचम्भे में कहते–'तेरी छाती में हृदय है या पत्थर ।' बेटे को फाँसी की आज्ञा हुई है स्वयं तख्त पर पड़ा है फिर भी हँसता है । तो इस पर मैं विश्वास के साथ कहता सुनिये–'यदि मेरा कल्याण इस बात में है कि मेरा बच्चा मेरे साथ न रहे तो वह कभी नहीं रहेगा और यदि कल्याण इसमें है कि मेरा बच्चा बच जाये तो संसार की कोई शक्ति इसको मुझसे छीन नहीं सकेगी । लोग रणवीर के लिये रोते थे किन्तु मैं तो नहीं रोया । एक दिन स्वामी सत्यदेवजी, जो महाराजा जम्मू कश्मीर के गुरु थे,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिलने आये । मेरी तरफ देखकर बोले कि इतनी विपत्ति में भी तू इस प्रकार प्रसन्न रह सकता है, इस प्रकार हँस सकता है तो तेरे बेटे को कौन छीन सकता है ? और उनकी बात सत्य निकली । रणवीर का बाल बाँका नहीं हुआ तथा अभियोग से बरी कर दिया ।

गायत्री माँ केवल लोक ही नहीं देती परलोक भी देती है । लोक–परलोक दोनों का सुधार करती है । आत्मा को पवित्र करने वाली वह माता आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति, धन–सम्पत्ति और ब्रह्मवर्चस् को देकर ब्रह्मलोक को ले जाती है, इसलिये कीर्ति धन–सम्पत्ति, सन्तान, बेटे–बेटियाँ, मोटरें, सम्बंधी आदि सब कुछ देने के बाद इस प्यारी गायत्री माँ ने कहा– "मार सबको लात, मेरे साथ आ । मैं ब्रह्मलोक को ले चलूँगी । सबको छोड़कर मैं गेरुए वस्त्र पहनकर माँ के दिखाये हुए मार्ग पर चल पड़ा ।"

"आठ वर्ष की आयु से लेकर अब तक एक भी दिन मुझे ऐसा याद नहीं कि जब मैंने गायत्री माँ की गोद में बैठकर अमृत न पिया हो । यह सारी कहानी सुनाने का मात्र एक ही उद्देश्य था कि आजकल कलियुग अवश्य है, किन्तु कलियुग में भी गायत्री की उपासना करने से वह सब कुछ मिलता है जो भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को बताया था । जो दूसरे ऋषियों, योगियों और महात्माओं ने बताया था । जो जगत्‌गुरु शंकराचार्य, महर्षि दयानन्द, गाँधी, टेगोर, तिलक, रामकृष्ण ने बताया वह असत्य नहीं हो सकता । अतः मैंने जीवन में स्वयं अनुभव करके देखा है, मैं कहता हूँ वह सत्य है, सत्य है ।"

माधवाचार्य की वाणी–सिद्धि

'माधव–निदान–आयुर्वेद में निदान विषयक एक सुप्रसिद्ध ग्रन्थ है । उसकी रचना इतनी अच्छी तरह से हुई कि उसको रोग निदान सम्बन्धी श्रेष्ठ ग्रन्थ कह सकते हैं । इस ग्रन्थ के रचयिता श्री माधवाचार्यजी महाराज की शिक्षा सामान्य थी । गायत्री उपासना से ही उनकी प्रगति हुई ।

उन्होंने एक सच्चे नैष्ठिक ब्राह्मण जैसी तपस्या से गायत्री पुरश्चरण किये । वृन्दावन में 13 वर्ष तक उन्होंने निरंतर गायत्री उपासना की, इतना करने पर भी खुद में विशेषता नहीं दिखाई दी और कोई लाभ भी नहीं दिखाई दिया । लम्बे समय तक निरन्तर इतना परिश्रम करने पर भी लाभ न मिलने से बहुत निराशाजनक स्थिति थी । वे निराश हो गये और साधना तथा वृन्दावन छोड़ कर काशी चले गये ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

काशी में कितने ही दिनों यहाँ—वहाँ भटकते रहे । निराशा और खिन्नता के कारण मन कहीं लगता नहीं था । एक दिन मणिकर्णिका घाट पर एक अवधूत से मुलाकात हुई । उनके बीच घनिष्ठता बढ़ी । माधवाचार्य ने मन की सारी व्यथा उनको बताई । अवधूत तांत्रिक थे, उन्होंने माधवाचार्य को भैरव की उपासना करने को कहकर उपासना का विधि—विधान भी बता दिया ।

एक वर्ष तक भैरव का अनुष्ठान करते—करते उनकी साधना सफल हुई । उस दिन साधना कर रहे थे तब एक आवाज सुनाई दी—"मैं प्रसन्न हूँ, वरदान माँग ।"

माधवाचार्य बहुत धैर्यवान और गम्भीर व्यक्ति थे । वे स्थिर भाव से अपनी साधना में लगे रहे और कुछ भी बोले नहीं । फिर से दूसरी बार आवाज सुनाई दी—वरदान माँग । वे फिर भी चुप रहे, तब तीसरी बार फिर से वही आवाज आई । तब माधवाचार्य ने कहा—"मुझे आपके दर्शन की इच्छा है । कृपा करके पीछे से बोलने के बदले मेरे सामने आकर अपने असली स्वरूप में मुझे दर्शन दीजिए ।" तो आवाज आई 'मैं तुम्हारे सामने आ नहीं सकता । इसका कारण गायत्री पुरश्चरण है, जो तुमने पूर्व में किये थे । मेरी शक्ति इतनी नहीं है कि गायत्री उपासक के सामने प्रकट हो सकूँ, तब माध्वाचार्य ने कहा—'जब आप में गायत्री उपासक के सामने प्रकट होने की सामर्थ्य नहीं है तो आपका वरदान भी अल्प सामर्थ्य वाला होगा । इसलिये मुझे आप से कुछ और चाहिए नहीं । हाँ, आप प्रसन्न हों तो मुझे इतना बतलाइये कि मेरी गायत्री साधना निष्फल क्यों गई और उसकी सिद्धि प्राप्त करने का कौन सा मार्ग है ? अदृश्य भैरव ने पीछे से ही जवाब दिया—'तुम्हारे पूर्वजन्म के पापों का नाश करने में १३ वर्ष की साधना खर्च हो गई, अभी एक वर्ष वही साधना और करो तब तुम्हारे पूर्वजन्मों के पापों का पूर्ण नाश होगा । जब तुम्हारी आत्मा पूर्णतः निष्पाप हो जायेगी तब तुमको गायत्री का ब्रह्मतेज मिलेगा । वृन्दावन जाकर फिर से एक साल तक साधना करने से तुमको इस बार सिद्धि मिलेगी, इतना कहकर भैरव अन्तर्ध्यान हुए । माधवाचार्य वृन्दावन आये और उन्होंने एक साल तक उसी स्थान पर फिर से साधना की । एक वर्ष के बाद उनको गायत्री का साक्षात्कार हुआ और उनकी वाणी सिद्धि हुई । 'संसार की भलाई हो और स्वयं को यश मिले ऐसे ग्रंथ की रचना करूँ यह प्रार्थना उन्होंने भगवती से की । उनकी इच्छा पूर्ण हुई । शिक्षा सामान्य होते हुए भी उन्होंने 'माधव निदान जैसे ग्रन्थ की रचना की ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री सतोगुणी शक्ति है, उसका सबसे पहला प्रभाव मनुष्य के जन्म–जन्मान्तरों से संचित हुए पाप, कुसंस्कारों को नाश करने में होता है । जब सर्व पापों का नाश होता है और आत्मा निर्मल बनती है तब उसका कोई विशेष प्रत्यक्ष लाभ दिखाई देता है । जिस स्थान में गहरी खाई खोदी गई हो उस स्थान पर सुन्दर महल बनवाना हो तो पहले खाई को पाटने में शक्ति लगानी पड़ेगी । खाई पूरने के बाद भूमि समतल होगी तभी महल बनाने का क्रम आरम्भ होगा । जो पूर्व जन्मों के संचित कुसंस्कारों के नाश हुए बिना थोड़ी ही साधना का तुरन्त लाभ उठाना चाहते हैं, उनको माधवाचार्य की शुरुआत की असफलता जैसा निराश होना पड़ता है । किन्तु जो धैर्यपूर्वक इस महाशक्ति की उपासना करते हैं उनको मधुर फल अवश्य प्राप्त होता है ।

विद्यारण्य को प्रज्ञा प्राप्ति

भारतवर्ष के धार्मिक और संस्कृत साहित्य से परिचित हर व्यक्ति ने विद्यारण्य स्वामी का नाम तो सुना होगा । वे विद्या के भण्डार सरस्वती के वरदपुत्र, महान् तपस्वी और अद्भुत प्रतिभा सम्पन्न थे । संस्कृत भाषा में उनकी उच्चकोटि की कृतियाँ हैं, उनको उस युग का व्यास कहते हैं । गायत्री उपासना से ही उनकी प्रतिभा का इतना विकास हुआ था ।

श्री स्वामी विद्यारण्य जी का दक्षिण भारत के एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार में जन्म हुआ था । इस परिवार के सब बच्चे बहुत बुद्धिमान और कर्तव्यनिष्ठ हुए हैं । स्वामी जी ने अपना बचपन विद्याध्ययन में बिताया । युवावस्था में प्रवेश करते ही उन्होंने गायत्री महामन्त्र द्वारा तपस्या शुरु की । यह तपश्चर्या पूरे २४ महापुरश्चरणों तक चलती रही, उसकी पूर्णाहुति करने के बाद जीवन मुक्त स्थिति में रहकर वे संसार का कल्याण करते रहे ।

साधना काल में दो राजपुत्र उनकी शरण में आये । उनका राज्य छीन लिया गया था और वे मारे–मारे फिर रहे थे स्वामी जी का आशीर्वाद पाकर अपना खोया हुआ राज्य फिर से प्राप्त किया और जीवन भर उन्होंने स्वामी जी के उपदेशों और आदर्शों के अनुसार ही अपना राज्य चलाया । समर्थ गुरु रामदास जी महाराज की प्रेरणा से छत्रपति शिवाजी ने आर्य संस्कृति की रक्षा के लिए राज्य की स्थापना की थी । उसी तरह स्वामी विद्यारण्य जी की कृपा और प्रेरणा से ये दो राजपुत्र विजयनगर नामक राज्य की स्थापना करने में समर्थ बने ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वामीजी को तप करते – करते लम्बा समय बीत गया । २४ पुरश्चरण पूरे हुए फिर भी उनको गायत्री माता का साक्षात्कार न हुआ । अपनी असफलता का उनको भारी दुःख हुआ और निराश होकर उन्होंने संन्यास धारण कर लिया, संन्यास धारण करने के बाद वे स्वामी विद्यारण्य के नाम से प्रसिद्ध हुए ।

वे संन्यासी बन गये तब एक दिन गायत्री माता ने उनको दर्शन दिये । इससे स्वामीजी को बहुत प्रसन्नता हुई और आश्चर्य भी हुआ । स्वामीजी ने माता से पूछा– 'मैंने २४ पुरश्चरण आपके दर्शन के लिए किये, आपने मुझे दर्शन क्यों नहीं दिये ? जब मैं सब प्रकार की कामना छोड़कर संन्यासी हो गया हूँ तब आप अनायास ही दर्शन के लिए क्यों उपस्थित हुई हैं ?' तब माता ने उत्तर दिया–'उसके दो कारण हैं । एक साधक के पूर्व जन्म के संचित पापों का नाश नहीं होता तब तक साक्षात्कार करने वाले दिव्य नेत्र नहींखुलते हैं । तुम्हारे २४ महापुरश्चरणों से पूर्वजन्मों के २४ महापापों का नाश हुआ है । तत्पश्चात् मेरे दर्शन के लिये योग्य बन सके हो । दूसरा कारण है–साधक के मन में रहने वाली कामनायें । इनके रहते साधक मेरा साक्षात्कार नहीं कर सकता । साधना में कामना की प्रवृत्ति जुट जाने से भावनाओं में पवित्रता नहीं रह पाती । साधना का स्नेह स्वार्थपूर्ण रहता है । निष्काम बने बिना मेरा दर्शन पा सकना सम्भव नहीं है । तुम्हारे मन में मेरे दर्शन की कामना थी, यद्यपि यह इच्छा सतोगुणी थी किन्तु यह भी एक प्रकार की कामना थी । जब तुमने सभी कामनाओं का परित्याग कर दिया, समर्पित भाव से हमारी आराधना में प्रवृत्त हुए तब अपने वात्सल्य प्रेम को रोक नहीं सकी और तुरन्त दर्शन देने के लिये चली आई ।' माता की स्नेहयुक्त वाणी को सुन कर विद्यारण्य जी भाव–विह्वल हो उठे । नेत्रों से प्रेमाश्रु बहने लगे तथा माँ के चरणों को धोने लगे ।

गायत्री माता ने विद्यारण्य से कहा– 'वत्स ! हम तुम्हारी निष्काम भक्ति भावना से अत्यन्त प्रसन्न हैं । तुम जो चाहो वर माँगो । माँ की दिव्य छवि के अवलोकन के आनन्द में डूबे स्वामीजी ने विह्वल होकर कहा– 'माँ ! आपकी असीम कृपा से जिस दिव्यदर्शन आनन्द का अधिकारी बन सका हूँ उसे मैं भौतिक कामनाओं के बदले गँवाना नहीं चाहता । मुझे कुछ भी नहीं चाहिए, आपके चरणों में श्रद्धाभक्ति बनी रहे ।' माँ गायत्री प्रसन्न होकर बोली–'तथास्तु !

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन्होंने निर्देश दिया कि लोकमंगल के लिए, सद्ज्ञान के प्रसार के लिए सद्ग्रंथों की रचना करो । स्वामी विद्यारण्य जी माँ की आज्ञा को शिरोधार्य कर सद्ग्रंथों की रचना में लग गये । उन्होंने अनेकों आर्षग्रन्थों का भाष्य किया, तथा नवीन ग्रन्थों की रचना की ।

स्वामी विद्यारण्यजी की प्रसिद्ध रचनायें इस प्रकार हैं–

(१) ऋग्वेद भाष्य (२) यजुर्वेद भाष्य (३) सामवेद भाष्य (४) अथर्ववेद भाष्य (५) शतपथ एतरेय, तैतरीय, ताण्ड्य आदि ब्राह्मण ग्रन्थों का भाष्य (६) दशोपनिषद् दीपिका (७) जैमिनीय न्यायमाला विस्तार (८) अनुभूति–प्रकाश (९) ब्रह्म–गीता (१०) सर्वदर्शन–संग्रह (११) माधवीय धातु वृत्ति (१२) शंकर–दिग्विजय (१३) काल–निर्णय (१४) श्री विद्या महार्णव तन्त्र (१५) पंचदशी आदि । इन सबके अलावा भी उनके कई ग्रन्थ हैं जिन में से कुछ प्राप्त भी नहीं हैं । उनकी अगाध विद्वता और महान् आध्यात्मिक अनुभूति में गायत्री माता की कृपा का प्रत्यक्ष प्रकाश दिखाई देता है ।

स्वामीजी के जीवन की अनेक चमत्कारी घटनायें हैं किन्तु इन चमत्कारों में से सबसे बड़ा चमत्कार उसका ब्रह्मतेज था । उससे वे स्वयं का और संसार के असंख्य प्राणियों का कल्याण करने में समर्थ बन सके और श्रृंगेरी पीठ के अधिपति के रूप में प्रतिष्ठित हुए ।

गायत्री का आग्नेयास्त्र

गायत्री उपासकों में स्वामी योगानन्द का नाम बड़ी श्रद्धा के साथ लिया जाता है । गायत्री उपासना में उनकी अगाध श्रद्धा थी, माँ की कृपा से उनको अनेकों सिद्धियाँ भी प्राप्त थीं । जीवन–पर्यन्त उन्होंने गायत्री उपासना का प्रचार प्रसार किया । अपनी भौतिक एवं आध्यात्मिक सफलताओं का कारण गायत्री उपासना को बताते हैं । उनका कहना है कि जगत् जननी ने हमारा सदा मार्गदर्शन किया तथा विकट परिस्थितियों में रक्षा की । प्रस्तुत है उन्हीं के शब्दों में जीवन की रोमांचक घटना जिसमें गायत्री महामन्त्र का चमत्कार दिखाई पड़ा ।

परमतत्व की जिज्ञासा और आत्म साक्षात्कार की अभिलाषा से प्रेरित होकर मैंने भोग का मार्ग छोड़ा और त्याग को अपनाया । संन्यास लेकर साधना मार्ग और गायत्री महामन्त्र की शोध में अनेक तीर्थ क्षेत्रों में घूमता रहा । हिमालय प्रदेश को भी मैंने छान मारा और कितने ही महात्माओं की लँगोटी धोई फिर भी परम शान्ति नहीं मिली । जिसने जो बताया वह सब किया । अनेक प्रकार की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साधनायें, अभ्यास, जप, प्राणायाम, पाठ आदि करता रहा किन्तु किसी भी तरह से आत्मा में प्रकाश के दर्शन नहीं हुए ।

यही भ्रमण करते एक यात्री से भेंट हुई, उसके द्वारा भी 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका एवं गायत्री साहित्य की प्रशंसा सुनी । वह किताबें भी अनायास मिल गयीं, मैंने सब पढ़ी । पढ़ते-पढ़ते ऐसा प्रत्यक्ष अनुभव होता था कि वह पुस्तकें किसी अनुभवी साधक द्वारा लिखी गई हैं । मेरी आत्मा ने पुस्तकों को ही गुरु मान लिया और बताये हुए विधि-विधान के अनुसार गायत्री उपासना आरम्भ कर दी ।

साधना की पहली अनुभूति यह हुई कि मुझे बार-बार परेशान करने वाली मेरे मन में छिपी हुई चिर-संचित वासनायें और दुर्भावनायें दूर हो गयीं । दिन-प्रतिदिन चित्त में शांति, स्थिरता और सात्विकता बढ़ने लगी । मेरा शरीर जो अधिकांशतः अस्वस्थ रहता था, बिना किसी औषधि के अपने आप स्वस्थ हो गया ।

मुझे ऐसा लगता कि गायत्री माता मेरी रक्षा करने के लिए सदा उपस्थित रहती हैं और मेरे अन्दर कोई दैवी शक्ति बढ़ रही है । एक बार बहुत ही आश्चर्यजनक अनुभव मुझे हुआ ।

भ्रमण करते-करते एक बार 'बेहरा' नामक गाँव में पहुँचा । उस गाँव के लोगों को प्रोत्साहन देकर गायत्री हवन करवाया । उस गाँव में विधर्मियों की संख्या अधिक थी, स्वयं के संकुचित दृष्टिकोण के कारण उन लोगों ने हवन में ईंटें फेंकी और विविध विघ्न उपस्थित किये । मैंने विरोध किया तब वे लोग मारने के लिए तैयार हुए । मैं वहाँ कुछ दिनों रहा, वे लोग प्रतिदिन कोई न कोई दुष्टता मेरे लिए तैयार रखते थे । एक दिन तो उन्होंने रात्रि को मेरे एकांत स्थान पर हमला करके मुझे मारने का षड्यन्त्र रचा ।

जब रात को सो रहा था तब माँ गायत्री सामने खड़ी थीं । उन्होंने मुझे हाथ पकड़कर उठाया और कहा-देखो ! तुमको मारने के लिये सामने दुष्टों की टोली खड़ी हुई है । मैं खड़ा हुआ और देखा तो थोड़ी ही दूर पर कुछ लोग हथियारों से सुसज्जित होकर मुझे मारने के लिये आ रहे हैं । अब मैं क्या करता ? मैंने गायत्री मन्त्र का आग्नेयास्त्र प्रयोग किया । मैंने उस क्रिया का अभ्यास तो किया था । किन्तु उसका प्रयोग तो पहली ही बार कर रहा था । उन आतताइयों पर मैंने मन्त्र का प्रहार किया, इससे उनके शरीर जलने लगे और वे चिल्लाते हुए गाँव की ओर भागने लगे । उनकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चिल्लाहट से लोग जाग गये । वे लोग कह रहे थे– हम जल रहे हैं, हमारे प्राण बचाओ । उनके कथन पर किसी को विश्वास नहीं हो रहा था, क्योंकि वहाँ आग कहीं नहीं दिखाई दे रही थी ।

लागों ने इसे उनका पागलपन समझकर चिल्लाने वालों को पकड़ा तो सचमुच ऐसा लगा कि मानो आग को स्पर्श किया हो । जो पकड़ने के लिए आगे बढ़े थे दूर हट गये ।

यह एक आश्चर्यजनक घटना थी । पूरा ही गाँव एकत्रित हो गया । पूछताछ करने पर आक्रांताओं ने बताया कि– 'हम स्वामीजी को मारने गये थे, वहाँ से वह पीड़ा होने लगी है । सब लोग मेरे पास आये । मैंने शांति–पाठ किया तब उनके शरीर का दावानल शान्त हुआ । मेरी इस चमत्कारी शक्ति की विज्ञप्ति हुई और लोग मेरे पास लाभ उठाने के लिए भेंट सौगात लेकर आने लगे । यह सोचकर कि यह सब मेरी साधना में विघ्न उपस्थित करेंगे, मैं वहाँ से दूसरे ही दिन चल दिया ।

उपरोक्त प्रयोग में एक उल्लेखनीय बात यह हुई कि प्रयोग की विधि ठीक प्रकार मालूम न होने से गायत्री का आग्नेयास्त्र प्रयोग करने से मेरे मुँह और हाथ भी जल गये थे जो १५ दिन में ठीक हुए ।

उस दिन से गायत्री पर मेरी श्रद्धा और भी दृढ़ हो गई । निरन्तर गायत्री तपश्चर्या में लगा रहा हूँ । मेरी सलाह से गायत्री उपासना करके कई लोगों ने लाभ प्राप्त किया है । सीकरी गाँव में एक ब्राह्मण के कोई सन्तान न थी, उसने गायत्री की साधना की, उसको एक पुत्र प्राप्त हुआ, वह लड़का सुसंस्कारी और सुन्दर है । एक रोगी का छः मास पुराना आधा सिर का दर्द इसी महाशक्ति की आराधना से अच्छा हुआ । नगरिया गाँव का एक लड़का साल में तीन माह तक स्कूल में नहीं गया, इसलिये पास होने की आशा नहीं थी । गायत्री जप करने से वह प्रथम श्रेणी में पास हुआ । इस तरह कई लोगों को छोटे–बड़े लाभ मिलते रहे हैं । किन्तु गायत्री उपासना का वास्तविक लाभ सतोगुण की वृद्धि और आत्म–कल्याण ही है । मैं उसी मार्ग पर प्रवृत्त हूँ और इसी भावना से गायत्री उपासना करने की सलाह देता रहता हूँ ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

काठिया बाबा की गायत्री साधना

कुछ समय पहले वृन्दावन में एक परमसिद्ध महात्मा थे । नाम तो उनका था–महात्मा रामदास, परन्तु वे लकड़ी की लँगोटी धारण करते थे । इसी कारण काठिया बाबा के नाम से ही प्रसिद्ध थे ।

काठिया बाबा ने अपनी साधना की सफलता का वर्णन इन शब्दों में किया है– 'विद्याध्यन के उपरान्त मैं गुरु के पास से वापस अपने घर आया तब सर्वप्रथम मुझे गायत्री मन्त्र सिद्ध करने की इच्छा हुई ।

हमारे बगीचे के पास एक बड़ा वट वृक्ष था । उसी के नीचे शापोद्धार कवच आदि विधि–विधान के साथ गायत्री मन्त्र का जप, अनुष्ठान आरम्भ किया । विधि की जानकारी मुझे गुरू–गृह में दी जा चुकी थी ।

७५ हजार मन्त्र जप कर चुकने पर आकाशवाणी हुई–'बेटा ! शेष जप ज्वालामुखी पर जाकर कर, तुझे सिद्धि मिलेगी ।'

आकाशवाणी से स्वाभाविक ही मुझ में उल्लास उमड़ा । आनन्दित भाव से मैं ज्वालामुखी की ओर चला, साथ में मेरा समवय भतीजा था । हमारे यहाँ से ज्वालामुखी ३५–४० मील दूर है । मार्ग में एक तेजपुंज महात्मा मिले । उनके प्रति मेरे मन में आकर्षण हुआ और मैंने उनसे वैराग्य की दीक्षा ली । दीक्षा लेने से मेरे भतीजे ने मना किया, मैंने उसकी नहीं मानी । तब वह लौटकर गाँव गया और पिताजी को ले आया । मुझे संन्यासी बने देख पिताजी दुःखी हुए, वे मुझे पुनः संसारी बनने का आग्रह करने लगे । डराया भी, जब उनके सभी प्रयास निष्फल हो गये तब वे मेरे गुरुदेव से कहकर मुझे अपने गाँव ले गये । वहाँ वट–वृक्ष के नीचे मैंने आसन लगाया व साधना शुरू की । रात्रि में आकाश–मण्डल को भेदकर गायत्री देवी प्रकट हुई और बोली–'वत्स ! मैं तुझ पर प्रसन्न हूँ वर माँग ।' मैंने साष्टांग प्रणाम कर कहा– 'माँ ! मैं तो वैराग्य ले चुका हूँ, अब कोई कामना नहीं । बस आप प्रसन्न रहें यही विनम्र प्रार्थना है ।' एवमस्तु कहकर देवी अन्तर्ध्यान हो गई ।

गायत्री की सिद्धि प्राप्त कर लेने पर काठिया बाबा को और कुछ पाना बाकी न रहा । वे आप्त काम हो गये, उन्हें दूर दृष्टि प्राप्त हो गई थी । वे कोई भी बात जान लेते थे, शिष्यों पर आये संकटों को दूर कर देते थे । उनकी वाणी–सिद्धि विलक्षण थी ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महापुरुष–सन्त की तरह स्वयं को छुपाने की यह शक्ति बाबा में अनुपम थी । द्रव्य का अभाव उनके यहाँ कभी नहीं रहा । उनकी लकड़ी की लँगोटी को देखकर सब लोग आश्चर्य में डूब जाते थे । सेवक लोग समझते थे कि बाबाजी ने सोने की मुहरें इकट्ठी की हैं, उन्हें छुपाने के लिए यह लकड़ी की लँगोटी बनवाई है । लोभ–लालच में पड़ कर उनके सेवकों ने उन्हें तीन बार दो–दो तोला जहर दिया, तब भी उन पर विशेष असर इस विष का नहीं हुआ । तब लोगों ने उनकी शक्ति का अनुभव किया । उनका आत्मतेज प्रचण्ड था, उनके सामने पहुँचाने वाला उनसे अभिभूत हो जाता था ।

उद्यड़ जोशी का अतीन्द्रिय ज्ञान

श्री दयाशंकर गिरजाशंकर जोशी चौरासी भट्ट एक सिद्ध पुरुष हो गये हैं । लोग उन्हें चाँदोद क्षेत्र के गुप्त योगेश्वर का उद्यड़ जोशी महाराज कहते थे ।

उन्होंने एक बार आत्मानुभूति बताई–'मैं तो बचपन से गायत्री उपासना करता हूँ । प्रातः ब्रह्ममूहुर्त में एक लोटा और धोती लेकर नर्मदा नदी में जाकर स्नान करना, वहाँ एक बड़े पेड़ के नीचे पूर्वाभिमुख बैठकर, एकाग्रचित्त से गायत्री मन्त्र का जप करना, यह मेरा क्रम था । शाम को घर आकर एक बार भोजन लेकर फिर शंकर जी की आराधना करता ।

मोक्ष की अभिलाषा से मैं समर्थ गुरु की खोज में था । माँ गायत्री की उपासना के प्रभाव से एक दिन एक महात्मा का दर्शन–लाभ हुआ । उनकी सेवा में लग गया । सेवा करते–करते एक दिन मध्य रात्रि में मुझ पर प्रसन्न होकर उन्होंने मेरी नाभि में हाथ से जोरदार धक्का लगाया । उसी क्षण मेरी कुण्डलिनी जागृत हुई और मुझे आत्म–साक्षात्कार हो गया । सारे जगत् को मैं ब्रह्मरूप में देखने लगा । स्थावर–जंगम रूप में मुझे चैतन्य स्वरूप दिखने लगा, उसी दिन से मुझे रात्रि में समाधि होने लगी ।

मैं जिस मनुष्य को देखता उसके भूत, भविष्य, वर्तमान को जानने लगा, किन्तु किसी को कहता नहीं, आवश्यकतानुसार ही उत्तर देता । मेरे अन्दर ही सभी देवी–देवताओं का निवास है । मैं तो 'कर्तुम्–अकर्तुम् अन्यथा कर्तुम्' रूप हूँ । जो होनेवाला है और जो नहीं होने वाला है दोनों को ही बदल सकता हूँ ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक दिन एक गृहस्थ अपनी हाथ की मुट्ठी में एक रुपया लेकर जोशी जी के पास आया और कहने लगा–"महाराज ! आप महात्मा हैं, बताइए कि मेरे हाथ में क्या है ?" महाराज ने हँसते–हँसते कहा–'भाई ! मेरी परीक्षा मत लो । पर वह माना नहीं, अपने आग्रह पर अड़ा रहा ।

तब महाराज जी ने कहा–'तुम्हारी मुट्ठी में जो है वह तुम्हारी चमडी के रंग में मिल जायेगा ।' उस व्यक्ति ने हाथ खोला तो देखा मुट्ठी का रूपया गायब है, उसकी जगह उतना ही बड़ा सफेद दाग पड़ गया है ।

महाराज जी का एक भक्त एक समय नर्मदा नदी में बाढ़ आने से उसमें डूब गया । महाराज जी को यह समाचार मिला तो वे मुँह ढककर सो गये । तीन घण्टे तक हिले–डुले नहीं । तब तक वह डूबने वाला भक्त आ गया, उनके चरण स्पर्श कर बोला–'महाराज जी ! डूबने के बाद मैं बहुत दूर तक बहता गया । तभी उस अथाह जलराशि में से किसी महात्मा ने मुझे बाहर खींच निकाला और किनारे लाकर छोड़ा ।'

उसकी बातें सुनकर महाराज हँसने लगे । उसके जाने के बाद बोले 'भक्तों की रक्षा करना तो मेरा काम है ।'

एक दिन महाराजजी ने एक भक्त को नर्मदा के किनारे पर जाने से मना किया । उसी दिन उसका सामान नाव से आने वाला था, इसलिये उसको नदी–तट जाना पड़ा । वह एक पत्थर पर बैठकर माल को देखने लगा, इतने में ही वह पत्थर खिसक गया और वह डूब गया । इस तरफ उद्यत महाराज सिर ओढ़कर सो गये । एक घण्टे के बाद मुँह खोलकर बैठ गये । थोड़ी देर बाद वह भक्त आया और पैर पकड़कर बोलने लगा–'भगवान ! आपकी आज्ञा का उल्लंघन करके मैं नर्मदा के किनारे गया । वहाँ पत्थर खिसक जाने से मैं डूब गया । फिर भी उसी क्षण मेरे मुँह से गुरुदेव–गुरुदेव शब्दों का उच्चारण होने लगा, एक सन्त ने मुझे पैर पकड़कर बाहर लाकर छोड़ दिया । महाराज आपकी कृपा को मैं कैसे भूल सकता हूँ, आपने ही मुझे बचाया है ।

एक बार महाराज जी एक भक्त महिला से मिलने गये । यह देवी महाराज जी की अनन्य भक्त थी और उनकी खूब सेवा करती थी । महाराज जी मिलने गये उस समय उसको १०४ डिग्री

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बुखार चढ़ा था । महाराजजी के दर्शन करके वह बोली—'प्रभो ! आपकी प्रसादी स्वरूप भस्म मुझे चाहिए । मेरा बुखार उससे भाग जायेगा ।' महाराज जी ने कहा 'माताजी ! आज सोमवार है, शुक्रवार को भस्म मिलेगी । शुक्रवार को उनकी मृत्यु हुई और वह भस्म में मिल गई ।

एक बार एक भक्त अपने मित्र के साथ महाराज जी से मिलने गया । सब लोग दरवाजे के पास बैठ गये । दरवाजे से होकर जोर की हवा आ रही थी । महाराज जी के पास में रखा हुआ घी का जो दीपक जल रहा था वह हवा के कारण न बुझ जाये इस विचार से एक व्यक्ति को दरवाजा बन्द करने के लिए संकेत किया । इतने में ही महाराज जी ने दीपक के आसपास अँगुली घुमाकर दरवाजा बन्द न करने के लिए इशारा किया । हवा जोर से आ रही थी फिर भी दीपक बुझा नहीं । ऐसे कई चमत्कार महाराज जी के सम्पर्क में आने वालों ने स्वयं देखे थे और अनेक लोग उनकी अलौकिक शक्ति से बहुत लाभान्वित हुए ।

विद्या विभूषण मुकुटराम जी

बड़ौदा राज्य के मंजुसर गाँव के निवासी श्री मुकुटराम जी महाराज ने गायत्री की उपासना से परम सिद्धि प्राप्त की थी । महाराज जी अपने बचपन में ब्रह्ममूहुर्त में उठकर ठण्डे पानी से स्नान करके गायत्री का जाप करने बैठ जाते थे । चतुर्मास में रात के ३-४ बजे तक एक ही आसन से जप करते थे । उन्होंने कितने ही पुरश्चरण किये और मरने तक जप और पुरश्चरण का क्रम चलता ही रहा । इस प्रकार की गायत्री साधना से उनको ये अलौकिक सिद्धियाँ प्राप्त हुई थीं—

(१) **विश्व दृष्टि**—महाराज अपने गाँव में बैठे यूरोप, अमेरिका और जर्मनी की बातें बताते थे । लोक—लोकांतर की अद्भुत बातें वे सुनते थे । पिछले महायुद्ध में जर्मनी की एक स्टीमर डूब रही थी, तब उसी समय वह समाचार उन्होंने लोगों को दिया था ।

(२) **सर्वभाषा ज्ञान**—वे गुजराती दूसरी कक्षा से ज्यादा पढ़े भी न थे, किन्तु गायत्री जप के प्रभाव से कितनी ही भाषाओं पर मातृभाषा जितना प्रभाव आ गया था । एक दिन उनके पास बड़ौदा के एक सरकारी कर्मचारी आये । वे तेलंगाना के निवासी थे, उनके साथ उन्होंने तेलगू भाषा में बात की । बाद में उसके साथ कन्नड़ में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बात करने लगे । एक फकीर के साथ फारसी में बातें करने लगे । कभी-कभी वे अंग्रेजी में बात करते हुए देखे गये । उनका कहना था कि-'येन ज्ञातेन इदं सर्व विज्ञातं भवति' गायत्री को जान लेने से और कुछ अज्ञात नहीं रहता ।

(३) अगाध शास्त्र ज्ञान से वे सम्पन्न थे ।

(४) **ज्योतिष ज्ञान**-वे कभी ज्योतिष पढ़े नही थे, लेकिन पास आने वाले मुँह देखकर भूत, वर्तमान, भविष्य की बातें बताते थे । जन्म कुण्डली भी बनाते थे और जमीन में गढ़ा हुआ द्रव्य भी दिखाते थे ।

(५) **योगशास्त्र ज्ञान**- शरीर और शरीर के अन्दर की शक्तियाँ स्वयं ने देखी हों, ऐसी वे बातें करते थे । उसी वक्त षटचक्रों की कितनी ही महत्वपूर्ण बातें कहते थे ।

(६) **वैदिक शास्त्र**-आयुर्वेद सम्बन्धी कितनी ही चमत्कारी बातें बतलाते थे । वे कहते कि नक्षत्रों के साथ वनस्पतियों का घनिष्ठ सम्बन्ध है । अमुक नक्षत्र में अमुक औषधि-वनस्पति को अमुक विधि के साथ लिया जाय तो अमुक प्रकार के रोग वाले मनुष्य को निश्चित रोग से मुक्ति मिलेगी । इसी तरह अमुक-अमुक औषधियों से अमुक-अमुक रोग निश्चित रूप से ठीक हो जाता है ।

(७) **मन्त्र शास्त्र सिद्धि**-मन्त्रशास्त्र बहुत गहन विषय है । कौन सा मन्त्र कौन-सी प्रकृति के व्यक्ति को दिया जाये तो उसको तुरन्त सिद्धि मिले, यह बात मन्त्र की आत्मा और व्यक्ति की आत्मा को पहचानने वाली शक्ति से सम्बद्ध है, उनमें यह शक्ति थी ।

(८) **वचन सिद्धि**-वचन सिद्धि के कितने ही चमत्कार उन्होंने दिखाये थे । एक बार ब्राह्मण लोग खाने बैठे थे तभी बारिश शुरू हुई, महाराज ने वर्षा बन्द होने को कहा और वह बन्द हो गई । तुरन्त बुखार उतर जायेगा ऐसा कहने के साथ ही कितनों के ही बुखार उतर गये थे । कहने मात्र से कई लोगों को सन्तान प्राप्त हुई । 'तुमको अब कभी दुःख भुगतना नहीं पड़ेगा ।' ऐसा जिसको भी कहा उसे फिर सुख ही मिला । महाराज जी ने जब-जब जो कुछ भी कहा वह अवश्य सिद्ध हुआ ।

(९) **अन्य शरीर धारण**-अपने शरीर को वैसा ही रखकर उन्होंने कितनी ही बार परकाया प्रवेश किया । एक बार उन्होंने एक मृत व्यक्ति के शरीर में प्रविष्ट होकर ऐसी गुप्त बातें बतायीं जिन्हें सुनकर सब लोग ही आश्चर्य में डूब गये ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(१०) परावाणी ज्ञान—परावाणी में दक्षता होने से उनको अनेक भाषाओं का ज्ञान था। वे पक्षी और जानवरों की भाषा भी समझते थे क्योंकि परावाणी में सब भाषा एक हो जाती हैं।

(११) लक्ष्मी सिद्धि— वे कभी कुछ करते नहीं थे और न कभी किसी से कुछ लेते थे, तो भी उनका राजाओं जैसा खर्च था। अपनी जिन्दगी में उन्होंने लाखों व्यक्तियों को दक्षिणा और अन्न दिया था। महायज्ञ, अतिरुद्र यज्ञ, महारुद्र यज्ञ आदि शाही ठाठ से किया था। ब्रह्मभोज भी किया था और उसके लिए याचना नहीं की थी और न किसी से दान लिया था। उनका चौका सबके लिए हमेशा खुला रहता था।

इन सबके बाबजूद भी कितने ही चमत्कारों को आगन्तुकों ने एवं जिनके यहाँ वे जाते थे, उन्होंने देखा था। वे कहते थे कि यह सब गायत्री के ही प्रताप से है।

गायत्री माता की कृपा से लोगों में आत्मबल बढ़ता है और वे परमात्मा के समीप पहुँचते हैं। इससे उनको स्वाभाविक ढंग से ईश्वर की शक्तियों पर अधिकार होता है। आत्मा—परमात्मा का अंश है। गायत्री द्वारा इन दोनों में एकता हो जाती है, यह एकता ही सिद्धियों की जननी है।

गायत्री उपासना की सिद्धियाँ

शेखावटी नामक प्रान्त में एक कस्बा है—लक्ष्मणगढ़। यहाँ पण्डित विश्वनाथ जी गोस्वामी एक जाने—माने गायत्री उपासक हो गये हैं। १९२७ विक्रम सम्वत में वे जन्मे और विक्रम सम्बत १९८७ में ६० वर्ष की आयु में उनका स्वर्गवास हो गया।

एक संस्कारवान मारवाड़ी सारस्वत ब्राह्मण परिवार में उनका जन्म हुआ। पहली पत्नी के निधन के बाद दूसरा विवाह हुआ। जब दूसरी पत्नी का भी देहावसान हो गया तो उन्हें गहरे आघात से वैराग्य उत्पन्न हुआ। एक समय भोजन, भूमि पर शयन और न्यूनतम वस्त्रों से देह ढकने का क्रम उनका चला, जो अन्त तक जारी रहा।

गायत्री के तीन पुरश्चरण उन्होंने किये। दो तो विधिवत् समाप्त हो गये, तीसरा चल ही रहा था जब उनका देहान्त हुआ। इसी तीसरे पुरश्चरण की अवधि में यह देखा गया कि नित्य सन्ध्या—बन्दन के बाद जब वे गायत्री जप में तल्लीन होते थे तो उस समय एक लम्बा काला नाग आता था और अपना फन फैलाकर उनके आसन से करीब १ मीटर दूर बैठ जाता था। जैसे ही गोस्वामी जी मन्त्र जप

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूर्ण कर विसर्जन मन्त्र बोलकर उठते, वह नाग चला जाता था । यह दृश्य भक्तों और दूसरे लोगों ने कई बार देखा । सर्प के इतना समीप होने पर भी साधक विश्वनाथ जी तनिक भी विचलित हुए बिना प्रशांत गम्भीर मुद्रा में ध्यान एवं जप का क्रम जारी रखते थे । गायत्री माता की ही शक्ति, सम्भवतः इस रूप में उन्हें दर्शन-संरक्षण देने आती थी ।

इन्हीं गोस्वामी के आशीर्वाद के फलस्वरूप सीकर का एक भक्त वीरावत, जो पहले नितांत सामान्य आर्थिक स्थिति का था बहुत वैभव-सम्पन्न एवं समृद्धिशाली हो गया । उस परिवार के सदस्य तब से गोस्वामी जी को ही अपना कुलगुरु मानते हैं और अपने कुल के छोटे बालकों के मुण्डन संस्कार बराबर उनकी समाधि पर करते हैं । संकटों के समय उन्हीं गोस्वामी जी की ही मनौती यह परिवार करता है और उन्हीं में विश्वास रखकर अपनी मनोकामनाओं की पूर्णता पाता है । इसी प्रकार अनेकानेक अन्य लोगों को भी उनके आशीर्वाद के कारण प्रत्यक्ष भौतिक एवं आंतरिक लाभ मिले हैं । अब उनकी जप-स्थली 'गोसाई जी का बाग' नाम से मशहूर है और उनके स्वर्गारोहण की तिथि पर लक्ष्मणगढ़ के कितने ही लोग उनके दर्शन के लिए जाते हैं । गोस्वामी जी १२ वर्षों तक मात्र दूध और फलों के आहार पर ही रहे थे । इस त्यागी एवं तपोनिष्ठ आत्मा को गायत्री की साधना-स्वरूप, वचन-सिद्धि की प्राप्ति हुई थी । इसी कारण सामान्य स्थिति वाला वीरावत परिवार करीब २० लाख की सम्पत्ति का स्वामी बना ।

अनेक अन्य संकटग्रस्त सज्जनों ने उनसे लाभ पाया था । उनके दत्तक पुत्र पं० ज्वालादत्त जी अभी उसी 'गुसाई जी के बाग' में रहते हैं । वे न तो अधिक पढ़े-लिखे हैं, न ही विशेष पूजा-पाठ करते हैं, फिर भी अपने पिताजी के आशीर्वाद से वे स्वस्थ-सानन्द, शांतिपूर्ण जीवन जी रहे हैं । गोस्वामी की गायत्री उपासना से उनका स्वयं का कल्याण तो हुआ ही, दूसरे कई व्यक्तियों ने भी लाभ प्राप्त किये, यह स्वाभाविक ही है । सर्वशक्तिमान गायत्री माता की शरण में जाने वाला कोई भी साधक गोसाई जी जैसों से प्रेरणा प्राप्त कर, श्रद्धापूर्वक साधना करके भौतिक एवं आध्यात्मिक सम्पदायें निश्चय ही प्राप्त कर सकता है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री की तन्त्र–साधना

महात्मा शुभानन्द जी एक अच्छे बंगाली महात्मा थे । उनका स्वर्गवास ६५ वर्ष की उम्र में हुआ था । उन्हें अंग्रेजी, संस्कृत और बंगाली भाषाओं का उत्तम ज्ञान था । वेदों का भली–भाँति अध्ययन उन्होंने किया था ।

वे जब वर्दमान में आते तो उनके दर्शन के लिए लोगों की बड़ी भीड़ एकत्र होती । शिक्षित वर्ग में भी उनका बहुत मान–सम्मान था ।

उनकी चेष्टाओं से कभी–कभी विक्षिप्तता का सा आभास होता । बैठे–बैठे कभी सहसा चौंक उठते, कभी ऐसे देखने लगते मानो कोई उनकी कुछ चीज उठाकर भागा है और वे उसे खोज रहे हों । कभी विकल हो उठते जैसे कोई संकट उन पर टूटने वाला हो, उनकी मुखाकृति से व्यग्रता–व्याकुलता स्पष्ट टपकती ।

सामान्य स्थिति में, उनसे ज्ञान वैराग्य के अध्ययनपूर्ण एवं अनुभवपूर्ण प्रवचन को लोग सुनते और आनन्दित होते, पर जब उन्हें पागलपन का दौरा आता तो देखने वालों को आश्चर्य भी होता, दुःख भी । कुछ लोगों ने उनसे शांत स्थिति में पूछा कि स्वामीजी ! आपके इस कष्ट का कारण क्या है ? तब उन्होंने बतलाया कि–मैं विद्याध्ययन के उपरांत आर्य समाज का उपदेशक बन गया । बहुत स्थानों पर घूमता रहा, एक जगह एक महात्मा से भेंट हुई । उनमें बहुत–सी आध्यात्मिक विशेषतायें देखकर मैं उनके साथ रहने लगा ।

उनका मुझ पर बहुत प्रभाव पड़ा । मैंने उन्हें गुरु मान लिया, उनसे शिक्षण प्राप्त किया और उपदेशक का कार्य छोड़कर फिर उन्हीं के बताये विधि–विधान के अनुसार एक निर्जन स्थान में रहकर गायत्री पुरश्चरण करने लगा ।

गुरुजी ने योग और तन्त्र के निश्चित विधान से गायत्री पुरश्चरण करने को कहा । यह तीन वर्ष में पूरा होना था, ढाई वर्ष तो सहज ही बीत गये, अन्तिम ६ माहों में नित्य विलक्षण दृश्य दिखाई देने लगे । लोभप्रद और भयदायक अनेक प्रसंग सामने आने लगे । मुझे बता दिया था कि साधना के अन्त में परीक्षा होती है और विभिन्न प्रकार के लोभ, आकर्षण, भय एवं उपद्रव सामने आते रहते हैं अतः मैं ऐसे प्रसंगों को धैर्यपूर्वक टालता रहा, ताकि अपनी तपस्या ठीक से पूर्ण कर सकूँ ।

परन्तु एक दिन एक नई ही घटना घटी । रात्रि के लगभग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

११।। बजे थे । मैं कुटी के भीतर बैंठा साधना कर रहा था, तभी द्वार पर एक स्त्री बार-बार दीखने लगी, जो टहल रही थी । मैं झोंपड़ी से बाहर निकला । चाँदनी रात थी । उसके प्रकाश में मैंने देखा सामने १८-२० वर्ष की अति सुन्दर युवती ! मैंने पूछा-'तुम कौन हो और किस लिए आई हो ?' तब उसने बताया कि वह पडौस के गाँव में रहती है, अपने भाई के पास जा रही थी तभी रास्ता भूल गई । जंगल में डर लगता है, झोंपड़ी देखकर यहाँ आ गई हूँ, रात भर के लिये आश्रय चाहती हूँ ।

मेरी कुटी बीच जंगल में थी । जंगली जानवरों का भी डर था और चोरों का भी । अतः मैंने उसे आश्रय देना उचित समझा ।

वह युवती भीतर आकर लेट गई । कुटी छोटी ही थी । मेरे आसन के पास ही वह थी । मैं जप कर रहा था, पर दृष्टि बार-बार उसके सुन्दर शरीर पर चली जाती थी । वह मेरी ओर तिरछी नजर से देखती, मन्द-मन्द मुस्करा रही थी । मेरे भीतर वासना भड़क उठी और उस आवेश को मैं रोक न पाया किन्तु इसके उपरान्त वह स्त्री उठी और उसने मेरी पीठ पर जोर से एक लात लगा दी । इससे मैं चक्कर खाकर गिर पड़ा, वह तूफान की तरह झोंपड़ी को तोड़ती-फोड़ती जाने कहाँ चली गयी ।

सारी रात मैं बेहोश पड़ा रहा । सुबह होश आने पर देखा-मैं ज्वरग्रस्त था और पीठ का भाग बुरी तरह छिल गया था । मेरे दो दाँत टूट गये थे और मुँह से खून बह रहा था ।

गुरु जी को यह समाचार मिल गया, वे आये और मुझे उठाकर ले गये । उपचार किया, एक माह में मैं ठीक हो गया । प्राण तो बच गये परन्तु मस्तिष्क पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा, वह असंतुलित-सा बना रहा और उसी कारण मैं रह-रहकर चौंक पड़ता हूँ । मुझे खतरा बना रहता है, तभी से मैं सबको यही बताता हूँ कि सामान्य जन के लिये गायत्री की वेदोक्त दक्षिणमार्गी साधना ही उपयोगी है । तन्त्र विधि से उपासना में लाभ और चमत्कार तो बहुत मिलते हैं, पर यह पथ कंटकाकीर्ण हैं । उसकी भयंकरता से तो साहसी ही अविचलित रह सकते हैं । साधना क्रम के समय के भयंकर दृश्यों से बचना अपेक्षाकृत कुछ अधिक आसान है, परन्तु प्रलोभनों-आकर्षणों से बच पाना अत्यन्त कठिन है । फिर थोड़ी सी भूल होने पर इस पथ के पथिक को प्राण खोने पड़ सकते हैं । इसलिए तन्त्र की अपेक्षा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

योग मार्ग सरल एवं उत्तम है, इसमें भले ही धीरे-धीरे उन्नति होती है, पर जितनी भी प्रगति होती है वह अधिक स्थायी होती है और इस मार्ग में डर तथा हानि नहीं है, लाभ ही लाभ है ।

पूर्व जन्मों का ज्ञान

घटना लगभग ५५० वर्ष पुरानी है । जयपुर के बूढ़ादेवल गाँव में दधीचि वंश के दाहिवाँ परिवार में एक बच्चे का जन्म हुआ । उसका नाम विष्णुदास ब्रह्मचारी था । वह आठ वर्ष की आयु से ही गायत्री उपासना में प्रवृत्त हुआ तथा आगे चलकर एक महान गायत्री उपासक के रूप में प्रख्यात हुआ ।

विष्णुदास परिवार की स्थिति ठीक न होने कारण चिन्तित रहा करते थे । भला माँ से क्या छिपा था । एक रात माँ गायत्री ने स्वप्न दिया कि "अमुक स्थान पर जमीन में धन गढ़ा है, अपनी आवश्यकतानुसार खोदकर निकाल लो ।" ब्रह्मचारी जी माँ की आज्ञा मानकर निर्देशित स्थान को खोदने लगे । नित्य खोदकर धन निकालते तथा अपने आसन के नीचे रख देते थे । उनकी माँ भी साथ ही रहा करती थी । उनकी माँ को शंका हुई कि पुत्र कुछ करता तो नहीं फिर धन कहाँ से आता है ? इसलिए उन्होंने एक दिन आसन उठा कर देखा, ब्रह्मचारी जी को मालूम हुआ कि माँ गायत्री की कृपा से धन प्राप्त होने की बात माँ को मालूम हो गयी है और उन्होंने दूसरों को भी बता दिया है । उनको बड़ा दुःख हुआ, वे पुष्कर नामक स्थान पर जाकर गायत्री का विशेष जप करने में प्रवृत्त हो गये ।

पुष्कर की एक झोंपडी में उन्होंने गायत्री पुरश्चरण शुरू किया । इस प्रकार २४-२४ लाख के तीन पुरश्चरण किये फिर भी उनको कोई विशेषता दृष्टिगोचर नहीं हुई। उन्होंने समझा कि उनका तप व्यर्थ गया और स्वयं दुःखी होने लगे । एक दिन उन्होंने देखा कि उनके पीछे तीन बड़ी-बड़ी चितायें जल रही हैं और आकाशवाणी हुई कि जन्म-जन्मान्तरों में तुमने तीन ब्रह्म-हत्यायें की थीं जो इस तप के प्रभाव से निर्मूल हो गई, आगे बढ़ो अब सिद्धि प्राप्त होगी ।

अब नये उत्साह के साथ फिर गायत्री तप में लग गये, तप के तेज से सर्वत्र उनकी कीर्ति फैल गयी । बड़े-बड़े राजा उनकी झोंपड़ी की धूल सिर पर लगाने लगे । जयपुर और जोधपुर के महाराजा स्वयं उनकी सेवा में उपस्थित होने लगे । उदयपुर के महाराजा ने अपने यहाँ उनको बुलाने का भारी आग्रह किया । ब्रह्मचारी जी ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहा—हमारे पुरश्चरणों की पूर्णाहुति, ब्रह्मभोज, दक्षिणा आदि से नहीं हुई है, इसलिए हम कहीं नहीं जा सकते हैं। महाराज ने स्वयं पूरा करने का वचन दिया और ब्रह्मचारी जी को जयपुर ले गये। उदयपुर में उनका शाही स्वागत किया गया और पुरश्चरण की पूर्णाहुति का सब कार्य आनन्द के साथ सम्पन्न किया गया। ब्रह्मचारी जी की आज्ञा से महाराज ने और भी अनेक धार्मिक कार्य सम्पन्न किये।

महाराज के कल्याण के लिए, दोषों और पापों के निवारण लिए ब्रह्मचारी ने 'काल पुरुष का दान' नामक एक उल्लेखनीय कृत्य कराया। सुवर्ण आदि आठ धातुओं, नव रत्नों से एक 'कालपुरुष' की मूर्ति बनवाई। उसकी शास्त्रोक्त विधि से भूतशुद्धि और प्राण—प्रतिष्ठा की। कहा जाता है कि जो कोई ब्राह्मण काल—पुरुष की मूर्ति का दान लेने आता था, उसको मूर्ति स्पष्ट दान न लेने के लिए संकेत करती थी, परिणामस्वरूप उसे लेने के लिए कोई तैयार नहीं हुआ।

अन्त में जिसका वंश कई पीढ़ियों से गायत्री का परम उपासक था, ऐसा एक ब्राह्मण दान लेने के लिए तैयार हुआ। उसने जैसे ही मूर्ति दान लिया, उसका शरीर काला पड़ गया। उसने मूर्ति का सब धन और अपनी संपत्ति दान में दी तब उसके शरीर की कालिमा दूर हुई, किन्तु जिस हथेली पर दान जल लिया था वह काली हो गयी। तीन गायत्री पुरश्चरण करने के बाद हथेली की कालिमा भी चली गयी। महाराज के कल्याण के लिए इस ब्राह्मण को इतना कष्ट सहन करना पड़ा। उसके लिए महाराज सदा उसके प्रति कृतज्ञ बने रहे और उसके परिवार को सदा सहयोग करते रहे।

ब्रह्मचारी जी के तप के प्रभाव से असंख्यों का कल्याण हुआ। वे ब्रह्मनिष्ठ और गायत्री उपासक बनने के लिए प्रयत्नशील रहे हैं। उनके प्रभाव और उपदेश से कई ब्राह्मणों ने गायत्री की शरण ली और परम कल्याण का लाभ प्राप्त किया

मृत्यु का पूर्व ज्ञान

विक्रम संवत् १९९४ में पं. भुदरमल जी के घर पर एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका नाम रखा—गया नन्दकिशोर। लड़का सुशील एवं अज्ञाकारी निकला, इसलिए घर पर उसका नाम हुकमीचन्द रखा गया। हुकमीचन्द जब ३० साल के हुए तब उनकी माता का देहान्त हो गया,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पिता पहले ही स्वर्ग सिधार चुके थे ।

व्यवसाय के क्रम में संयोगवश उन्हें कलकत्ता जाना पड़ा । वहाँ से वे १९५७ में वापस रतनगढ़ लौटे । शहर के बाहर एक धर्मशाला में ठहरकर गायत्री जप करने लगे । वहीं रहकर उन्होंने गायत्री के तीन पुरश्चरण किये, इसके उपरान्त वे काशी में जा बसे और अन्त तक काशी में रहे । उन्हें भी वचन सिद्धि प्राप्त हो गई थी । अनेक सेठ–साहूकार उनके भक्त बन गये थे और उनके आशीष से अपनी आर्थिक समृद्धि बढ़ाते रहे । कई सामान्य स्तर के लोग उनके आशीर्वाद से सेठ और लक्षाधिपति हो गये ।

उन्हें अपनी मृत्यु की जानकारी, गायत्री माँ की कृपा से एक माह पहले ही हो गई थी । उसी दिन से उन्होंने अन्नाहार छोड़ दिया था और केवल थोड़ा–सा दूध ही लेते थे । मृत्यु के लिए जब ८ दिन ही शेष रहे तब उन्होंने दूध लेना भी छोड़ दिया और जल पर रहने लगे । चार दिन शेष रहे जानकर उन्होंने जल का भी परित्याग कर दिया । निश्चित दिन को गायत्री जप करते–करते ब्राह्मणों द्वारा वेदपाठ के मध्य उन्होंने आषाढ़ शुक्ल पंचमी विक्रम सं. १९८२ में इस नश्वर शरीर से मुक्त होकर गायत्री–लोक को प्राप्त किया ।

उन्हीं के सुपुत्र श्री पं. वैद्यनाथ जोशी ने उनकी प्रेरणा से काशी में मारवाड़ी संस्कृत पाठशाला नामक एक छोटी–सी संस्था शुरू की थी । यह संस्था गरीब विद्यार्थियों को संस्कृत पढ़ाने के लिए शुरू की गई थी । यह निरन्तर वृद्धि करती गई । आज यह संस्था काशी में 'मारवाड़ी संस्कृत कालेज' के नाम से सुप्रसिद्ध है । श्री वैद्यनाथ जी के दो पुत्र, श्री शिवलालजी जो कि कथाकार शिरोमणि तथा पं. रामेश्वर जी जोशी कर्मकाण्ड शिरोमणि हैं । दोनों ही आजकल रतनगढ़ में ठाठ से रहते हैं और पुत्र–पौत्रों समेत सुखी–सम्पन्न हैं ।

इच्छा मृत्यु

बूँदी राज्य में 'खडकड' नामक एक पुराना गाँव है । जिसके समीप ही अरावली पर्वत है । इस पर्वत श्रृंखला के बीच से एक नदी बहती है । दृश्य मनोरम और प्रशांत है ।

अब से लगभग ७० वर्ष पहले यहीं पर पं. कन्हैयालाल ब्रह्मचारी नामक महात्मा रहते थे । वे गायत्री के परम उपासक थे । अपने जीवन में उन्होंने कई पुरश्चरण किये तथा सिद्धियाँ प्राप्त कीं, उनके प्रभाव की ख्याति पूरे प्रदेश में थी ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनी मृत्यु के बारे में उन्होंने ६ माह पहले से ही जान लिया था, तब वे निकटवर्ती गाँव में जाकर अपने परिचितों से मिलने लगे । उनसे विदा होते समय वे अत्यन्त प्रसन्न, गम्भीर वाणी में कहते–'भाईयो ! अब मैं जा रहा हूँ, मेरा अन्तिम नमस्कार ।'

निर्वाण के दिन वे चम्बल नदी के किनारे कोका शहर से ८ मील दूर 'केशोराय पाटन' नामक जगह पर जा पहुँचे । इस स्थान पर चम्बल का प्रवाह पूर्व दिशा की ओर है । इसी से उसकी पवित्रता विशेष मानी जाती है और वहाँ प्रति वर्ष कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है जिसमें हजारों ग्रामीण सम्मिलित होते हैं ।

वहीं पहुँचकर ब्रह्मचारी जी ने भूमि को गोबर से लीपा–पोता, वहीं उन्होंने स्नान आदि के उपरान्त संध्या–वंदन किया, फिर वे उस पोती हुई भूमि पर दर्भासन बिछाकर पद्मासन में बैठ गये । उपस्थित लोगों ने उनके आदेशानुसार एक नया श्वेत वस्त्र उनके सिर पर दूर से ही डाल दिया था । लोगों से उनने कह रखा था कि जब तक उनका शरीर स्वतः न गिरे, तब तक उसे स्पर्श न करें । तदुपरांत प्राणायाम द्वारा प्राण को सहस्रार में स्थापित कर वे समाधिस्थ हो गये । उत्सुक लोग चारों तरफ कुतूहलपूर्वक, शान्ति से उन्हें ध्यानलीन, निस्पन्द देख रहे थे । एक प्रहर तक वे बिल्कुल अविचल रहे । तभी लोगों ने देखा कि उनके सिर में से एक तेज बिस्फोटक ध्वनि निकली, जैसे तोप चली हो और तभी ब्रह्मचारी जी का शरीर भूमि पर लुढ़क गया । उसके उपरांत भक्तों–प्रशंसकों ने अन्तिम संस्कार किया व जगह–जगह पर ब्रह्मभोज हुए । उनका नाम और महत्व आज भी प्रान्त में चर्चा का विषय है ।

बाबा खूँटी सिंह

कानपुर के श्री रूपलाल शर्मा की आत्मानुभूति है । कानपुर जिले में खांडेराव नामक एक प्रसिद्ध विद्वान बिठूर में पटकापुर गाँव के पास एक आश्रम में रहते थे । आश्रम के सामने एक विशाल वट वृक्ष था, जिसमें वर्षा और ग्रीष्म ऋतु में हजारों लोग आश्रय ले सकते थे । श्री खांडेराव ने वहाँ दीर्घकाल तक गायत्री अनुष्ठान की पूर्णाहुति पर ब्रह्मभोज किया, इसमें मैं भी सम्मिलित हुआ था ।

ब्रह्मभोज भारी घूमधाम से चला, दिन भर पंगते बैठती रहीं तो भी बहुत से लोग बाकी ही थे । रात में व्यवस्थापकों ने खबर दी कि घी समाप्त हो गया है और अभी ४ डिब्बे घी और चाहिए । खाँडेराव जी को चिन्ता हुई । फिर शांत चित्त से वे ध्यान में बैठ गये और व्यवस्थापकों से बोले–'जाओ !

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गंगा जी से गंगाजल भर लाओ, उसका घी की जगह प्रयोग करो । लोगों ने इसे परिहास माना, पर जब वे बार–बार आग्रह करने लगे तब ४ व्यक्ति गये और डिब्बों में गंगाजल भरकर ले आए । सबने गंगाजल में तली पूड़ियाँ खायीं । आज तक कभी भी मैंने कहीं वैसी स्वादिष्ट पूड़ी नहीं खायीं ।

दूसरे दिन ४ डिब्बे घी ले जाकर गंगा जी में डाल दिया गया, क्योंकि खांडेराव जी ने कहा–'मैंने ४ डिब्बे घी कल गंगा जी से उधार माँगे थे, जो लौटाने जरूरी हैं ।'

१९ वीं शताब्दी की बात है । अलवर राज्य का एक सामान्य नागरिक वैराग्य लेकर मथुरा आया । यहाँ एक पहाड़ी पर जाकर गायत्री पुरश्चरण किया । एक करोड़ जप पूर्ण होने पर वे सिद्ध–पुरुष बन गये, उन्हें गायत्री का साक्षात्कार हो गया । यह सिद्ध–भूमि आज भी गायत्री टेकरी के नाम से प्रसिद्ध है । वहाँ पंचमुखी कमलासना गायत्री–मूर्ति स्थापित है ।

इन महापुरुष को लोग खूँटी सिद्ध महाराज के नाम से जानते हैं । वे आजीवन मौन रहे । मूक आशीर्वाद से उन्होंने अनेक मृत व्यक्तियों को जीवित किया, बन्ध्याओं को सन्तान दी, निर्धनों को धन दिया । दो बार ब्रह्मभोज कराया, जिसके धन का प्रबन्ध कहाँ से हुआ ? यह सभी के लिए विस्मय की बात रही । उनकी सिद्धियों के बारे में अनेक कथायें प्रसिद्ध हैं । अलवर के महाराज उनकी प्रशंसा सुनकर मथुरा आये थे । दूर–दूर से लोग उनके दर्शन को आते थे । उनका तेज अपूर्व था, वे कुछ भी बोलते नहीं फिर भी उनके पास जाने वालों की शंकाओं का समाधान हो जाता । उनकी अन्न–जल की व्यवस्था स्वतः ही हो जाती । कभी भी किसी से उन्हें उस हेतु कहते नहीं देखा–सुना गया । अपनी गुफा में वे प्रवेश करने के बाद सप्ताहों वहीं रहते । प्रेतबाधा से पीड़ित कितने ही स्त्री–पुरुषों के प्राणों की उन्होंने रक्षा की थी ।

गायत्री उपासना के सत्परिणाम सुनिश्चित हैं

भौतिक और आत्मिक क्षेत्र की प्रगति में गायत्री उपासना कितनी प्रभावशील होती है, यह उसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं । वस्तुतः हमारी जानकारी में ऐसे असंख्य उदाहरण हैं जब गायत्री उपासकों को ऐसी परिस्थितियों में लाभ मिला जिनकी रत्ती भर भी आशा नहीं थी । यह एक नहीं अनेक व्यक्तियों के जीवन में घटित हुआ उससे यह विश्वास हो गया है कि गायत्री उपासना के चमत्कारिक पक्ष को भी झुठलाया नहीं जाना चाहिए। यों हमारा सारा प्रतिपादन बौद्धिक, तार्किक तथा वैज्ञानिक रहता है तथा श्रद्धा की शक्ति–सामर्थ्य प्रत्यक्ष देवता की शक्ति सामर्थ्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के समान होती है। अनायास मिलने वाले चमत्कारिक लाभ उसके प्रतिफल होते हैं। किसी विशेष आपत्ति का निवारण करने एवं किसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए जो गायत्री साधना की जाती है, उसका परिणाम बड़ा ही आशाजनक होता है। देखा गया है कि जहाँ चारों ओर निराशा, असफलता, आशंका और भय–अन्धकार ही छाया हुआ था, वहाँ वेदमाता की कृपा से दैवी प्रकाश उत्पन्न हुआ और निराशा आशा में परिणत हो गई, बड़े कष्टसाध्य कार्य तिनके की तरह सुगम हो गये। ऐसे अनेक अवसर अपनी आँखों के सामने देखने के कारण हमारा यह अटूट विश्वास हो गया है कि कभी किसी की गायत्री साधना निष्फल नहीं जाती।

गायत्री साधना आत्म–बल बढ़ाने का अचूक आध्यात्मिक व्यायाम है। किसी को कुश्ती में पछाड़ने एवं दंगल में जीतने, इनाम पाने के लिए कितने लोग पहलवानी और व्यायाम का अभ्यास करते हैं। यदि कदाचित कोई अभ्यासी किसी कुश्ती को हार जाये तो भी ऐसा नहीं समझना चाहिए कि उसका प्रयत्न निष्फल गया। इसी बहाने उसका शरीर तो मजबूत हो गया। वह जीवनभर अनेक प्रकार से अनेक अवसरों पर बड़े–बड़े लाभ अर्जित करता रहेगा। निरोगता, सौन्दर्य, दीर्घजीवन, कठोर परिश्रम करने की क्षमता, दाम्पत्य सुख–सुसन्तति, अधिक कामना, शत्रु से निर्भयता आदि कितने ही लाभ ऐसे हैं जो कुश्ती पछाड़ने से कम महत्वपूर्ण नहीं। साधना से यदि कोई विशेष प्रयोजन प्रारब्धवश पूरा न हो तो भी इतना निश्चय है कि किसी न किसी प्रकार साधना की अपेक्षा कई गुना लाभ अवश्य मिलकर रहेगा।

आत्मा स्वयं अनेक ऋद्धि–सिद्धियों का केन्द्र है। जो शक्तियाँ परमात्मा में हैं वे सभी उनके अमर युवराज आत्मा में हैं। समस्त ऋद्धि–सिद्धियों का केन्द्र आत्मा में है, परन्तु जिस प्रकार राख से ढका हुआ अंगार मन्द हो जाता है वैसे ही आंतरिक मलीनताओं के कारण आत्मतेज कुण्ठित हो जाता है। गायत्री साधना से मलीनता का पर्दा हटता है और राख हटा देने से जैसे अंगार अपने प्रज्ज्वलित स्वरूप में दिखाई पड़ने लगता है, वैसे ही साधक की आत्मा भी अपने ऋद्धि–सिद्धि समन्वित ब्रह्मतेज के साथ प्रकट होती है। योगियों को जो लाभ दीर्घकाल तक कष्टसाध्य तपस्यायें करने से प्राप्त होता है, वही लाभ गायत्री साधकों को स्वल्प प्रयास से प्राप्त हो जाता है।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org